महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ६१ **अंक** : ०९

दयानन्दाब्द: १९५

विक्रम संवत्: चैत्र शुक्ल २०७६

कलि संवत्: ५१२०

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,१२०

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-३०० रु.
पाँच वर्ष-१२०० रु.
आजीवन -३००० रु.
एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर
द्विवार्षिक-९५ पाउण्ड/१५२ डॉलर
त्रिवार्षिक-१४० पाउण्ड/२२५ डॉलर
आजीवन (१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.
एक प्रति - ३ पाउण्ड
एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

मई प्रथम २०१९

अनुक्रम

०१. वर्ण-व्यवस्था बुद्धिमत्तापूर्ण है...	सम्पादकीय	०४
०२. मृत्यु सूक्त-२८	डॉ. धर्मवीर	०७
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	१०
०४. विज्ञान और धर्म	आचार्य मुंशीराम शर्मा	१२
०५. जीवन क्या है?	सुधा सावन्त	१५
०६. मनुष्य शाकाहारी या मांसाहारी....	डॉ. भूपसिंह	१७
०७. आर्यसमाज के दीवाने स्वामी....	कन्हैयालाल आर्य	२२
०८. शङ्का समाधान- ४७	डॉ. वेदपाल	२६
०९. संस्था की ओर से...		२७
१०. आर्यजगत् के समाचार		३३

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

(अम्बेडकर जयन्ती के उपलक्ष्य में)

वर्ण-व्यवस्था बुद्धिमत्तापूर्ण है : डॉ. अम्बेडकर

श्री भीमराव रामजी अम्बेडकर को डॉ. अम्बेडकर बनाने में आर्यसमाज और आर्यसमाज द्वारा प्रचारित वर्णव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण योगदान है। जन्मगत जातिवाद के विरुद्ध समरसता और समान-अधिकार का वातावरण निर्मित करने वाले और उन्हें उच्च शिक्षा के लिए सुविधा-सहायता उपलब्ध कराने वाले वही लोग थे जो आर्यसमाज से सम्बद्ध/प्रभावित थे और वर्णव्यवस्था में विश्वास रखते हुए उसे व्यवहार में ला रहे थे। डॉ. अम्बेडकर उच्च शिक्षित लेखक-चिन्तक थे, ऐसा नहीं है कि वे प्रत्येक घटना के महत्त्व को न समझते हों, किन्तु फिर भी उन्होंने राजनीति में आने के बाद प्रतिक्रियात्मक शैली को अपनाया। शायद, यह उनकी राजनीतिक विवशता थी, मौलिक प्रेरणा नहीं। इस लेख की कुछ बातें पाठकों को अनकही, अनसुनी लगेंगी, किन्तु हैं वे प्रामाणिक।

उन्होंने मनु और उनके द्वारा प्रतिपादित वर्ण-व्यवस्था की प्रशंसा की है। डॉ. अम्बेडकर को केवल उन प्रक्षिप्त श्लोकों पर आपत्ति थी, जो जन्म पर आधारित जातिवाद का विधान और समर्थन करते हैं, जिनके कारण समाज में छूत-अछूत, ऊँच-नीच और अधिकार-हनन का व्यवहार आरम्भ हुआ। वर्णव्यवस्था गुण-कर्म-योग्यता के आधार पर निर्धारित होती है। जबकि जन्मगत जातिवाद इन गुणों की उपेक्षा करके जन्म से ही निर्धारित हो जाता है। डॉ. अम्बेडकर के मतानुसार जन्मगत जातिवाद वर्णव्यवस्था नहीं है, अपितु वर्णव्यवस्था की विकृत और विरोधी व्यवस्था है। वे लिखते हैं-''जाति वर्ण का विकृत रूप है। यह विपरीत दिशा में प्रसार है। जात-पाँत ने वर्ण-व्यवस्था को पूरी तरह विकृत कर दिया है।'' (अम्बेडकर वाङ्मय, खंड १, पृ. २६३) और ''जाति का आधारभूत सिद्धान्त वर्ण के आधारभूत सिद्धान्त से मूलरूप से भिन्न है,...बल्कि मूलरूप से परस्पर विरोधी है।'' (वही, पृ. ८१)

वे वर्णव्यवस्था की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं-''वर्ण और जाति दो अलग-अलग धारणाएँ हैं।**...दोनों में इतना ही अन्तर है जितना पनीर और खड़िया में**'' (वही, पृ. ११९)। डॉ. अम्बेडकर का कहना है कि कुछ लोगों ने वर्णव्यवस्था की गलत व्याख्या करके उसे मूर्खतापूर्ण और उपहासास्पद बना दिया है। वास्तव में वर्ण-व्यवस्था निन्दनीय नहीं थी। उन्होंने स्पष्ट लिखा है-''(महात्मा गाँधी ने) वर्ण की वैदिक धारणा की व्याख्या करके जो उत्कृष्ट था, उसे वास्तव में उपहासप्रद बना दिया है।...वर्ण के बारे में महात्मा के विचार न केवल वैदिक वर्ण को मूर्खतापूर्ण बनाते हैं बल्कि घृणास्पद भी बनाते हैं'' (वही, पृ. ११९)। दूसरी ओर, महर्षि दयानन्द द्वारा प्रस्तुत व्याख्या को बुद्धिमत्तापूर्ण बताकर डॉ. अम्बेडकर न केवल वर्ण-व्यवस्था को स्वीकार्य मानते हैं, अपितु महर्षि दयानन्द की भी प्रशंसा करते हैं-

''मैं मानता हूँ कि स्वामी दयानन्द व कुछ अन्य लोगों ने वर्ण के वैदिक सिद्धान्त की जो व्याख्या की है, वह बुद्धिमत्तापूर्ण है और घृणास्पद नहीं है।''

(जातिप्रथा उन्मूलन, पृ. ११९)

डॉ. अम्बेडकर के मन्तव्य के अनुसार, वेदोक्त अथवा महर्षि मनुप्रोक्त वर्ण-व्यवस्था की एक उत्कृष्टता यह थी कि उसमें व्यक्ति को अपनी योग्यता के आधार पर वर्ण-परिवर्तन करने की स्वतन्त्रता थी जिससे व्यक्ति का विकास और उत्थान अवरुद्ध नहीं होता था-''व्यक्ति दक्षता के आधार पर अपना वर्ण बदल सकता था और इसलिए वर्णों को व्यक्तियों के कार्य की परिवर्तनशीलता स्वीकार्य थी'' (अम्बेडकर वाङ्मय, खण्ड १, पृ. ३०)। इसी व्यवस्था ने प्राचीन भारत को विद्या में 'विश्वगुरु' धन में 'सोने की चिड़िया' और बल में 'अपराजेय' बना दिया था। विश्व में किसी देश की सभ्यता इतनी उन्नत नहीं थी।

डॉ. अम्बेडकर अपने ग्रन्थों में जब यह लिखते हैं कि ''मनु महान् विद्वान् था'' (वही, ७.१५१), ''मनु आदरसूचक संज्ञा थी'' (७.१७९), ''मनुस्मृति सबसे महत्त्वपूर्ण धर्मग्रन्थ स्वीकार किया जाना चाहिए'' (७.२२८,

८.६५), ''मनु ने जाति के विधान का निर्माण नहीं किया'' (१.२९), तो ऐसा प्रतीत होता है कि उनका अन्त:करण मनु को सभी आरोपों से मुक्त मानता है। जातिवाद मनु की देन नहीं है।

जब से इस देश में जन्म के आधार पर जातिवाद प्रचलित हुआ तब से इसका सर्वतोमुखी पतन आरम्भ हो गया। जितनी अच्छाइयाँ थीं वे वेदोक्त वर्णव्यवस्था के कारण थीं और जितनी बुराइयाँ पनपीं वे जन्म के आधार पर जातिवाद के कारण पनपीं। जन्म पर आधारित जातिवाद ने व्यक्ति के साथ ऊँच-नीच, जाति-पाँति का भेदभाव आरम्भ कर दिया, जिससे एकता में सुदृढ़ भारतीय समाज हजारों जातियों-उपजातियों में विघटित होता गया। मानव-मात्र के लिए शिक्षा प्राप्ति का स्वाभाविक जो अधिकार था, वह कुछ रूढ़िवादी लोगों द्वारा छीन लिया गया, जिससे भारत का अधिकांश समाज अज्ञानान्धकार से ग्रस्त हो गया। स्पष्ट है कि कोई भी अज्ञानी-अशिक्षित व्यक्ति अथवा समाज कभी उन्नति नहीं कर सकता, तो परिणाम यह निकला कि देश अवनति की ओर गिरने लगा। इसकी विद्या भी गई, बल भी गया और धन भी लुट गया। अन्तत: इसको विदेशियों-विधर्मियों का गुलाम बनकर जीना पड़ा। दु:ख की बात तो यह है कि आज स्वतन्त्र होकर भी यह देश अपनी अवनति और परतन्त्रता के कारणों को दूर नहीं कर सका है। जन्मना जातिवाद के दंश से पीड़ित हमारे भाई-बन्धु प्रतिदिन विधर्मी बनते जा रहे हैं, भारत माता का एक-एक अंग धीरे-धीरे कटकर या गलकर पृथक् होता जा रहा है, किन्तु हम अब भी नहीं चेत रहे। भारत की बची एकता और अखण्डता को यदि अब भी बचाया जा सकता है तो उसका एक ही उपाय है-'जन्मना जातिवाद का उन्मूलन करके वैदिक वर्णव्यवस्था को स्वीकार करना।'

जन्मना जातिवाद वर्णव्यवस्था का विरोधी और विकृत रूप है, उसमें व्यक्ति की रुचियाँ, योग्यताएँ, गुण, विशेषताएँ महत्त्वहीन होकर उसकी उन्नति अवरुद्ध हो जाती है और बुद्धि कुंठित होती जाती है। व्यवहार में घोड़े-गधे में कोई भेद नहीं रहता। बच्चे ने जिस माता-पिता के यहाँ जन्म ग्रहण कर लिया, वह उसी दिन से बिना किसी गुण-कर्म-योग्यता के माता-पिता की ऊँची या नीची जाति का बन जाता है और आजीवन बना रहता है। गुण-कर्म-योग्यता का जितना अपमान-तिरस्कार जातिवाद में होता है, वैसा कहीं अन्यत्र नहीं होता। एक बार किसी जाति का कहलाकर, घोर अपराध-पाप करते हुए भी वह ऊँची जाति का व्यक्ति 'ऊँचा' बना रहता है और महान् पुरुष बनके भी नीची जाति का व्यक्ति 'नीचा' ही कहलाता है। जातिवाद का बन्धन इतना कठोरतम है कि यहाँ धर्म तो बदल जाता है, किन्तु जाति नहीं बदल पाती। व्यक्ति और समाज के लिए जातिवाद जैसी दुर्भाग्यपूर्ण समाज-व्यवस्था विश्व में कोई अन्य नहीं है। यह सदा पतन की ओर ही ले जाती है।

वैदिक वर्णव्यवस्था में व्यक्ति को अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार उन्नति करने का अवसर प्राप्त होता है और उन्हीं के अनुसार उसको वर्ण और व्यवसाय के चयन का अवसर प्राप्त होता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र इनमें से किसी भी कुल में उत्पन्न बालक गुरुकुल में जाकर जिस वर्ण की शिक्षा या प्रशिक्षण प्राप्त करता है, उसके बाद स्नातक बनते समय आचार्य उसके उसी वर्ण की घोषणा करता है, जैसे आजकल विश्वविद्यालय में पढ़े गये पाठ्यक्रम के अनुसार बी.ए., बी.कॉम., एल.एल.बी. या एम.बी.बी.एस आदि की उपाधियाँ प्रदान करते हैं। व्यक्ति, प्राप्त उपाधि के अनुसार ही जीवन में व्यवसाय करता है। लगभग यही प्रक्रिया वर्णव्यवस्था में होती है।

किसी भी कुल का बालक जो गुरुकुल में प्रवेश नहीं लेता अथवा प्रवेश लेकर भी प्रमाद या मन्दबुद्धिता के कारण किसी द्विज वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) का प्रशिक्षण नहीं लेता वह 'शूद्र' कहलाता है और उसे जीवन में शारीरिक श्रम पर आधारित रोजगार करना होता है, जैसे आजकल अल्पपठित जन चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी (सेवक, पीयोन, अर्दली, चौकीदार आदि) का रोजगार पाते हैं। **वैदिक व्यवस्था में 'शूद्र' शब्द का कोई निन्दित घृणित अर्थ नहीं है, इसका अर्थ है-'शु द्रवतीति'=जो स्वामी के आदेशानुसार इधर-उधर आ-जाकर शारीरिक श्रम का**

कार्य करता है। इस प्रकार आर्यों में चार वर्ण होते थे। उनमें, पहला माता-पिता से और दूसरा स्नातक बनना रूप, विद्याजन्म होने से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य **द्विज** कहलाते थे, विद्याजन्म के अभाव में एकजन्म वाले को **शूद्र** कहा जाता था। वेदोक्त वर्ण-व्यवस्था में वर्ण के आधार पर ऊँच-नीच, छूत-अछूत का भेदभाव नहीं था, परस्पर सौहार्द का व्यवहार और भाव होता था। उसका आधार वेदमन्त्र में द्रष्टव्य है-

रुचं नो देहि ब्राह्मणेषु रुचं राजसु नस्कृधि।
रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि देहि रुचारुचम्।।

अर्थात्-'हे ईश्वर! मेरा व्यवहार और विचार ऐसा रहे कि मैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सबसे प्रेम-सौहार्द रखने वाला बनूँ। मेरे हृदय में प्रत्येक मानव के लिए प्रेम-सौहार्द बना रहे, ऐसी कृपा कीजिए।'

वेदोक्त वर्णवस्था में, एक बार किसी वर्ण का चयन करने के बाद भी जीवन में गुण-दोषों के आधार पर वर्ण-उन्नति और वर्ण-पतन का अवसर रहता था। ऐसा नहीं था कि एक बार कोई व्यक्ति 'द्विज' वर्ण में दीक्षित हो गया और वह उस वर्ण के कर्त्तव्यों का पालन न करते हुए भी उसमें बना रहे। कर्त्तव्य-पालन न करने वाले और अकरणीय कर्मों (अपराध-पाप) को करने वालों को राजसभा या धर्मसभा वर्ण से पतित कर देती थी, जैसे आजकल सरकार अपने कर्त्तव्य का पालन न करने वाले या पाप-अपराध करने वाले व्यक्ति की पदावनति (डिमोशन) कर देती है और अच्छा कार्य करने वाले की पदोन्नति (प्रमोशन) करती है। मनुस्मृति का एक श्लोक इस प्रक्रिया पर प्रकाश डाल रहा है-

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियात् जातमेवं तु विद्यात् वैश्यात् तथैव तु।।

(मनुस्मृति १०.४५)

अर्थात्-'ब्राह्मण के गुण-कर्म-योग्यता अर्जित करनेके बाद शूद्र 'ब्राह्मण' बन जाता है और अपने विहित कर्मों के त्याग से ब्राह्मण 'शूद्र' बन जाता है। इसी प्रकार क्षत्रियों और वैश्यों का भी गुण-कर्म-योग्यता के अनुसार वर्ण-परिवर्तन होता है।'

प्राचीन इतिहास में वर्णपरिवर्तन के अनेक उदाहरण भी मिलते हैं। शूद्र-कुल में उत्पन्न होकर भी कवष ऐलूष और मतंग 'ऋषि' बने, क्षत्रिय कुल में उत्पन्न राजा **विश्वरथ** महर्षि विश्वामित्र बना, ऋषि कुल में उत्पन्न होकर भी रावण 'राक्षस' कहलाया और क्षत्रियकुल में उत्पन्न होकर भी रघु-पुत्र प्रवृद्ध तथा सगर पुत्र असमंजस् वर्ण से पतित-बहिष्कृत कर दिये गये थे।

इस प्रकार वैदिक वर्णव्यवस्था व्यक्ति और समाज की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है जबकि जाति-व्यवस्था विकास के सारे मार्गों को अवरुद्ध कर देती है। समाज के लिए वर्ण-व्यवस्था वरदान है और जाति-व्यवस्था अभिशाप है। जातिवाद ने हिन्दू समाज को विघटित करके टुकड़े-टुकड़े कर दिया है और यह विघटन आज भी जारी है। अनुसूचित और गैर-अनुसूचित वर्गों के तटस्थ राष्ट्रहितैषी बुद्धिजीवी इस स्थिति की चिन्ता करने भी लगे हैं, किन्तु सत्तालोलुप नेता लोकतन्त्र की आड़ में सामान्य भावुक जनों को गुमराह कर रहे हैं। कुछ विदेशी शक्तियाँ भी इस स्थिति का लाभ उठा रही हैं। कुछ वर्ष पूर्व, महाराष्ट्र के विश्वविद्यालय के एक कुलपति जो राज्यसभा सांसद थे, उन्होंने भेंट करने की इच्छा व्यक्ति की। मैं उनसे मिला। वे अनुसूचित समुदाय से हैं और मेरे मनुविषयक शोध-साहित्य के गम्भीर पाठक हैं। काफी चर्चा होने के उपरान्त उन्होंने कहा-''काश, आपका मनुस्मृति-विषयक यह शोधकार्य डॉ. अम्बेडकर के जीवन-काल में प्रकाशित हो जाता, तो हमारे समुदाय की यह विघटनकारी स्थिति न होती।'' अभी भी चेतने का समय है। सभी समुदायों के नेता और बुद्धिजीवी भावुकता, स्वार्थ और आत्मकेन्द्रता से ऊपर उठकर उक्त स्थिति को रोक सकते हैं।

सुरेन्द्र कुमार

जैसे पवन सब को सुख देता हुआ सब के रहने का स्थान हो रहा है वैसे ही विद्वान् को होना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४१

मृत्यु सूक्त-२८

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर

लेखिका - सुयशा आर्य

परोपकारिणी सभा के पूर्वप्रधान डॉ. धर्मवीर जी के वेद-विज्ञान के अन्तर्गत प्रसारित व्याख्यानों की जनोपयोगिता को ध्यान में रखकर 'परोपकारी' में प्रकाशित किया जा रहा है। व्याख्यानों के लेखन का कार्य उनकी ज्येष्ठ पुत्री सुयशा आर्य कर रही हैं। सम्पादक

इमे जीवा विमृतैराववृत्रन्नभूद्भद्रा देवहूतिर्नो अद्य।
प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः।।

हम इस वेद-ज्ञान की चर्चा में ऋग्वेद के १० वें मण्डल के १८ वें सूक्त की चर्चा कर रहे हैं और उसके तीसरे मन्त्र की चर्चा में आधे मन्त्र पर हम विचार कर चुके है- **इमें जीवा विमृतैराववृत्रन्नभूद्भद्रा देवहूतिर्नो अद्य=अर्थात् हमने जो सफलता प्राप्त की है, वो परमेश्वर की कृपा से प्राप्त की है।** परमेश्वर को हमने अपना साथी बनाया, हमने उसे पुकारा, हमने उसका आह्वान किया और हमारी पुकार पूर्ण हुई, हमारी पुकार सफल हुई। इस मन्त्र का उत्तरार्ध कहता है-

प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय

यह मन्त्र इससे पहले भी इन्हीं शब्दों में आ चुका है।

मृत्योः आयुः प्रतरं दधानाः।

वहाँ हमने अपने इस दीर्घ जीवन का आधार दीर्घ जीवन का कारण समझा था।

आप्यायमानाः प्रजया धनेन, शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः।

हमको पहले मन्त्र में बताया गया था कि यदि हमारा जीवन यज्ञीय हो जाएगा, शुद्ध और पवित्र हो जाएगा तो हमारे पास समृद्धि भी आ जाएगी।

आप्यायमानाः प्रजया धनेन, अर्थात् ऐश्वर्य भी आ जाएगा, संतति भी आ जाएगी। यहाँ इस मन्त्र में कह रहा है, **प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय**, हमारे स्वस्थ होने का क्या लक्षण होता है-कहता है कि स्वस्थ होना अर्थात् प्रसन्न होना। जो व्यक्ति स्वस्थ नहीं है वो प्रसन्न भी नहीं हो सकता और जिसके चेहरे पर प्रसन्नता नहीं है, वो स्वस्थ नहीं हो सकता। स्वास्थ्य की परिभाषा हमने पीछे बताई- **प्रसन्नात्मेन्द्रियमनः स्वस्थः इत्यभिधीयते** जिसकी आत्मा, इद्रियाँ, मन प्रसन्नता का अनुभव करें वह स्वस्थ होता है। यहाँ कहता है हम अच्छे मार्ग पर चलें, कैसे? **नृतये हसाय** नाचते-गाते, हँसते-खेलते।

जो मनुष्य प्रसन्न होता है वो खिला हुआ होता है, उसका हृदय विस्तृत होता है, बड़ा होता है। फूल जब खिलता है तो चौड़ा हो जाता है, दूर तक फैल जाता है। जब कोई चीज मुरझाती है तो सिकुड़ जाती है, छोटी हो जाती है, कम हो जाती है। इसलिए मनुष्य जब प्रसन्न होता है तो वो शरीर से भी विकसित होता है, खिलता है और मन से भी खिलता है।

संस्कृत के बहुत सारे शब्द हम सामान्य रूप से काम में लेते हैं, लेकिन उनकी गहराई का कई बार हमको पता नहीं चलता। हम मन्दिर में जाते हैं, जो चीज भगवान् को अर्पण करने के लिए ले जाते हैं उसको प्रसाद कहते हैं, लेकिन जो वस्तु आप ले जा रहे हैं वो प्रसाद बनती ही तब है जब उसको आप भगवान् को अर्पण कर देते हैं। आपने यज्ञ के लिए जो कुछ बनाया है, वो प्रसाद तब बनता है जब उसकी आहुति आप यज्ञ में दे चुकते हैं। इसलिए हमारे यहाँ भोजन को भी प्रसाद कहने की आदत है, विशेष रूप से जो साधु समुदाय है वो यह नहीं कहते कि भोजन कर लिया या भोजन पा लिया, वो कहते हैं प्रसाद पा लिया। उसको हम प्रसाद क्यों कहते हैं? हमारे मन में तो एक ही बात रहती है कि इसको भगवान् को खिला दिया है, यज्ञ में डाल दिया है इसलिए उसको प्रसाद कहते हैं। लेकिन इसके शब्दार्थ में यदि हम जाकर देखें तो प्रसाद शब्द का अर्थ होता है-प्रसन्नता। **प्रसीदति** अर्थात् प्रसन्न

हो रहा है। और इसलिए जो व्यक्ति दु:ख से दूर हो जाता है, जिसका दु:ख समाप्त हो जाता है, परे हो जाता है, वह प्रसन्न होता है। इसके लिये गीता में एक पंक्ति कही है,

प्रसादे सर्वदु:खानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु: बुद्धि: पर्यवतिष्ठते।।
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयत: शान्तिरशान्तस्य कुत: सुखम्।।

मतलब **सुख की यात्रा प्रसन्नता से प्रारम्भ होती है। जो व्यक्ति प्रसन्न नहीं रह सकता, वो सुखी नहीं हो सकता। जो व्यक्ति सुखी है वह प्रसन्न अवश्य होगा।**

गीता की शब्दावली है-

प्रसादे सर्व दु:खानां हानिरस्योपजायते-

कहता है जब मनुष्य प्रसन्न होता है तो शरीर स्वस्थ होता है, दु:खों की हानि हो जाती है, दु:ख समाप्त हो जाते हैं और-

प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धि: पर्यवतिष्ठते।

यह बड़ी रोचक बात है। अर्थात् मनुष्य जो कुछ सोचता है, वह ठीक कब सोचता है? कहते हैं जिसका चित्त प्रसन्न है, निर्मल है और यह प्रसन्न शब्द किसी भी तरह की मलिनता के परे हटने को बताता है।

नभ: प्रसीदति, नभ: प्रसन्नम्,
सलिलं प्रसन्नम्, दिशा प्रसन्ना।

अब यहाँ प्रसन्न शब्द का प्रयोग देखिए। नभ, आकाश प्रसन्न है, जल प्रसन्न है, दिशायें प्रसन्न हैं, अर्थात् निर्मल, शान्त हैं तो मनुष्य जब प्रसन्न होता है, तो वह भी निर्मल होता है। जल का मल, आकाश की धूल, कीचड़, यह वस्तुओं का मल है। लेकिन मन का मल क्या है, मन की मलिनता क्या है? छल है, कपट है, ईर्ष्या है, राग है, द्वेष है। तो कहता है कि **यह मन प्रसन्न कब हो सकता है? यह प्रसन्न तभी हो सकता है, जब यह निर्मल हो।** इसके अन्दर किसी तरह की धूल, मिट्टी, कचरा जैसे पानी में, आसमान में होता है, वैसे राग, द्वेष, ईर्ष्या इस मन में न हो, तो यह मन प्रसन्न हो जाएगा और परमेश्वर की भक्ति प्रसन्न व्यक्ति ही कर सकता है। **जो दु:खी है, राग-द्वेष से पीड़ित है, क्रोधित है वह परमेश्वर को क्या देखेगा?** निर्मल चित्त वाला व्यक्ति ही ईश्वर की उपासना कर सकता है, भक्ति कर सकता है, और वही व्यक्ति प्रसन्न हो सकता है। वह प्रसन्न होता है इसलिए अपनी प्रसन्नता को बाँटता है।

प्रसन्नता एक निराकार चीज है, एक भाव है, उसको जिस माध्यम से बाँटा जाता है उसका नाम ही प्रसाद है, वह वस्तु ही प्रसाद है, प्रसन्नता का कारण है अर्थात् वस्तु प्रसाद नहीं है। हमारी प्रसन्नता जो जुड़ी हुई है, उसके कारण वह वस्तु प्रसाद बनी है। वह भगवान् को समर्पित हुई है इसलिए वह वस्तु प्रसाद बनी है। हमारे अन्दर उदारता है, हम उसको बाँट रहे हैं, इस कारण वह वस्तु प्रसाद बनी है।

प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धि: पर्यवतिष्ठते।

इसलिए जब मनुष्य कोई निर्णय करता है, कोई विचार करता है, उसके मन में कोई बात आती है, तब यदि वह राग से, द्वेष से, क्रोध से, ईर्ष्या से पीड़ित होता है तो उचित विचार नहीं कर पाता, उचित निर्णय नहीं ले पाता, लेकिन जब प्रसन्न होता है, उसका हृदय निर्मल होता है उस समय वह देने की सोचता है, बाँटने की सोचता है, दूसरों को जिस काम से प्रसन्नता होती हो, उसको करने की सोचता है। मनुष्य जब प्रसन्न होता है, तब वह देता है, उसे देकर अच्छा लगता है, देना ही अच्छा लगता है, इसलिए वह प्रसाद बाँटता है।

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना-

अब जो इसमें नहीं लगा है, वह पवित्र भावनाओं वाला, पवित्र विचारों वाला नहीं है, प्रसन्नतावाला नहीं है, उसको सुख भी नहीं मिल सकता। वह चिन्तित रहेगा, आशंकित रहेगा, भयभीत रहेगा, हर समय उसके मन में कोई न कोई डर, कोई न कोई भय, चाहे वह काल्पनिक ही क्यों न हो, उसके मन में आता रहेगा। लेकिन जो प्रसन्न होता है, वह परमेश्वर का चिन्तन कर सकता है, परमेश्वर की भक्ति कर सकता है, परमेश्वर पर विश्वास ला सकता है। यही भाव इस मन्त्र में कहा गया है- **प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय।** उसका रास्ता हँसने-गाने का रास्ता होता है। **प्राञ्च:** अर्थात् प्रकृष्ट मार्ग पर चलने वाला होता है। वह मार्ग अच्छा लगता है, सुन्दर लगता है। हमारे मन में प्रसन्नता होती है तो हमारे चेहरे पर भी हँसी आती है। **नृतये अर्थात्**

हम नाच उठते हैं। प्रसन्नता का अतिशय होता है। नाच उठना, यह अत्यन्त प्रसन्नता का प्रतीक है। जो आदमी दीर्घ जीवन चाहता है, उसे हँसने-गाने वाला होना चाहिए। वह चिन्तित रहने वाला, तनाव में रहने वाला, उदास रहने वाला भयभीत रहने वाला नहीं होना चाहिए। जो व्यक्ति तनाव में रहते हैं, वे दीर्घजीवी नहीं हो सकते। जो ईर्ष्यालु होते हैं, काम, क्रोध, लोभ, मोह में त्रस्त रहते हैं वे भी दीर्घजीवी नहीं हो सकते हैं।

इस मन्त्र में दीर्घ जीवन का उपाय बताया गया है। हमारी जो प्रसन्नता है, हमारी जो खिलखिलाहट है, हमारे अन्दर जो उत्साह है, वो **'प्राञ्चः'** आगे बढ़ने का मार्ग है। श्रेष्ठता की ओर जाने का है। **द्राधीय आयुः** जैसे यह आयु बड़ी तो होगी, लेकिन श्रेष्ठ भी होगी, दुःख वाली नहीं होगी, आशंका, भय, तनाव वाली नहीं होगी। क्योंकि मनुष्य जब तक आश्वस्त नहीं हो जाता, वह भय से मुक्त नहीं हो सकता। किसी नौकर पर जब तक भरोसा नहीं होता, तब तक आशंका समाप्त नहीं हो सकती। जिस दिन हम ईश्वर के प्रति समर्पित हो जाते हैं, तब हमारे अन्दर पूर्ण प्रसन्नता आती है, क्योंकि हमारे पास फिर भय का कोई कारण ही नहीं बचता।

हम भयभीत होते हैं संसार की वस्तुओं से, संसार के लोगों से। लेकिन यदि हम ईश्वर का सान्निध्य पाते हैं, ईश्वर का विश्वास पाते हैं, ईश्वर के प्रति हम आश्वस्त होते हैं, फिर संसार के मनुष्यों से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं होती। ये उसके सामने बड़े तुच्छ हैं। इनका बल, इनका सामर्थ्य, उसके सामने नहीं चलता। परमेश्वर जिसको बचाता है हजार उपाय करने पर भी मनुष्य उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाते हैं।

हमारे अन्दर की प्रसन्नता हमको दीर्घजीवी बनाती है, हमारे जीवन को बड़ा बनाती है, स्वस्थ भी बनाती है। इसलिए मनुष्य को स्वस्थ रहने का इस मन्त्र में उपाय बताया है। इस पूरे मन्त्र को यदि आप एक समग्र दृष्टि डालकर देखें तो इसका मूलभाव निकलकर आ रहा है कि दीर्घ जीवन पाया जा सकता है। उसको पाने के लिए हमें परमेश्वर की सहायता, उसका मार्गदर्शन या उसके बताए रास्ते पर चलना अनिवार्य है और जब हम उस रास्ते पर चलते हैं तो फिर हमारे जीवन में एक ही वस्तु का स्थान रहता है- **नृतये हसाय।** हम हँसते-खेलते इस जीवन को जी सकते हैं। अर्थात् जो मृत्यु से भयभीत होता है, वह मृत्यु से नहीं बच सकता। जो मृत्यु के डर से डरता नहीं है, वही मृत्यु के डर से बच जाता है, वह मृत्यु के भय से भयभीत नहीं होता है और **मृत्यु से बचना या मृत्यु को धकेलना और कुछ नहीं है, मृत्यु के भय से दूर हो जाना ही है।** तो यह मन्त्र हमको एक सुन्दर उपदेश दे रहा है कि हम अपने जीवन को हँसते-खेलते हुए, कैसे बिता सकते हैं और मृत्यु को कैसे दूर कर सकते हैं।

गुरुकुल के लिये प्रवेश-सूचना

परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान-अजमेर में वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के उपदेशक तैयार करने हेतु उपदेशक कक्षा में प्रवेश प्रारम्भ हैं।

प्रवेशार्थी की न्यूनतम आयु १४ वर्ष तथा कक्षा आठ या उससे अधिक उत्तीर्ण हो। आर्ष-पद्धति से व्याकरण, दर्शन तथा महर्षि निर्दिष्ट पाठ्यक्रम के अध्यापन की व्यवस्था है।

गुरुकुल में अध्यापन, भोजन एवं आवास की निःशुल्क व्यवस्था है।

प्रवेश के इच्छुक अभ्यर्थी सम्पर्क करें-

आचार्य विद्यादेव, आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर।

दूरभाष- ९८७९५८७७५६

कुछ तड़प-कुछ झड़प

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

सृष्टिकर्त्ता सर्वव्यापक प्रभु का उपहास- संसार भर में ईश्वर की सत्ता व सर्वव्यापकता में विश्वास रखने वाले मत पन्थ परमात्मा की सत्ता तथा सर्वव्यापकता का उपहास उड़ाते हैं। कोई पूछने वाला व प्रश्न उठाने वाला नहीं। आर्यसमाज में अब पाखण्ड दम्भ को कोई चुनौती देने वाल पं. लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द और पं. रामचन्द्र देहलवी का वंश समूह दिखाई नहीं देता। चुनौती दे कौन? आचार्य, महात्मा व योगाचार्य तो अनेक हो गये हैं, परन्तु विरोधियों के उत्तर देने और उन्हें चुनौती देने कोई आगे नहीं आता।

डॉ. पारस कुमार मिश्रा जी ने एक भावनाशील उदार हृदय आर्यपुरुष का सन्देश दिया है कि बुराहीने अहमदिया का नाम ले लेकर वार किये जा रहे हैं। आप पं. लेखराम जी के अकाट्य तर्कों से युक्त उनकी तकज़ीब का अनुवाद करके उनका मुँह बन्द करें। उन्हें उत्तर दिया है कि रक्तसाक्षी पं. लेखराम ग्रन्थ रत्न तथा कुल्लियात के दो भागों का समाजें लाभ उठाकर शोर मचाने वाले विरोधियों का मुँह बन्द नहीं करतीं। नया ग्रन्थ क्या तैयार किया जावे? फिर भी निराश नहीं किया जा सकता। 'नबी का पैगाम मौत' पुस्तक का नया संस्करण तैयार किया जा सकता है। मुसलमान भी इसकी माँग करते हैं।

यजुर्वेद के मन्त्र ४०-५ में ईश्वर की सर्वव्यापकता तथा उसकी सत्ता का जैसा वैज्ञानिक शैली से तार्किक वर्णन है वैसा विश्व साहित्य में अन्यत्र कहाँ है? उपरोक्त वेद मन्त्र में बताया गया है वह प्रभु दूर से दूर और निकट से निकट है। न जाना पड़े और न आना पड़े। गंगा के कुम्भ स्नान, कैलाश पर्वत, वैष्णो देवी से कामनायें पूरी करवाने वाले, आक्षेप करने वालों के किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते।

हमारा ऐसे सब मत पन्थों से प्रश्न है कि जब आपके सब शब्दकोशों तक में Omnipresent सर्वव्यापक शब्द परमात्मा के लिये प्रयोग किया जाता है तो फिर अमेरिका से प्रकाशित बाइबिल के नये संस्करण में पृष्ठ १८ पर यह लिखा मिलता है ''But the Lord came down to see the city.'' अर्थात् परमात्मा मनुष्य निर्मित नगर को देखने नीचे उतरा। इंग्लैण्ड से छपे बाइबिल में भी पृष्ठ आठ पर 'नीचे उतरा' शब्द है। इनसे पूछो सर्वव्यापक प्रभु की सर्वव्यापकता कहाँ गई? आज तो चढ़ने-उतरने के अनेक साधन है। बाइबिल के भगवान् के पास तो न स्कूटर है और न यान-विमान। वह ऊपर-नीचे कैसे चढ़ता व उतरता है? वेद ईश्वर को कण-कण में, हर जन में और हर मन में व्यापक-ओत-प्रोत मानता है। आर्यसमाज में सिद्धान्त-चर्चा, शास्त्रार्थ-साहित्य का अब महत्त्व न होने से विरोधी उछल-कूद करते हैं।

अप्रैल प्रथम परोपकारी के अंक में डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी के पठनीय लेख का प्रचार पूरे सामर्थ्य से होना चाहिये।

क्या आपको पता है- पानीपत हरियाणा में हमारे एक योद्धा आर्यवीर को एक coaching centre से इसलिये निकाल दिया गया है कि उसने 'आर्य लोग बाहर से भारत में आये' कथन का तार्किक प्रतिवाद किया। माननीय अभय जी, श्री विकास, श्री अमित, अंकुर सब जूझ रहे हैं। वहाँ के उत्साही कार्यकर्त्ता इस विषय पर बोल सकने के लिये जिन सज्जनों को आमन्त्रित करें। उनको अवसर आने पर वहाँ सहयोग के लिये पहुँचना ही चाहिये। यह स्थिति उसी समय जब उक्त आर्यवीर को अकादमी से निकाला गया, हमारे विद्वानों में से किसी एक को आर्यों के आदि देश पर एक युक्तियुक्त लेख पत्रों में देना चाहिये था। पं. भगवद्दत्त जी के समाज में अब इस विषय पर गहन अध्ययन करने वालों की कमी एक चिन्ता का विषय है। देश-विदेश के कई सुयोग्य लेखक ऋषि के दृष्टिकोण को स्वीकार करते हैं। श्री अनवर शेख ने एक पुस्तक में कड़े शब्दों में यह लिखा है कि आर्य लोग भारत में बाहर से आये, ''ऐसा कहना कोरी बकवास है।''

वे जीवनदानी कहाँ गये?- दिल्ली में महासम्मेलन करने-करवाने का एक फ़ैशन सा है। ऐसे एक महासम्मेलन में श्रीयुत आर्यवेश जी (पूर्व जगवीर) ने यह घोषणा कर

दी कि हम आर्यसमाज के लिये एक सौ या दो सौ जीवनदानी तैयार करेंगे। इस पर करतल ध्वनि भी हुई होगी? वेश सम्प्रदाय पहले भी जीवनदानी मैदान में उतारता रहा है। जब रामपाल के विषैले प्रचार व कुकृत्यों के विरुद्ध हरियाणा में आचार्य बलदेव जी ने आन्दोलन छेड़ा तो उस समय एक भी वेश की मैदान में शक्ल दिखाई नहीं दी। तब तो ये जीवन दानी आचार्य बलदेव जी की खिल्ली उड़ाते थे।

जब दिल्ली में सत्यार्थप्रकाश पर मुसलमानों ने अभियोग चलाया तब आर्यवेश सहित एक भी जीवनदानी कोर्ट में कभी दिखाई न दिया। 'जीवनदानी' की रट लगाने वाले यह तो बतायें कि इनका जीवनदानी से क्या अभिप्राय है? यदि ये लोग जीवन दानी है तो पं. लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्याम भाई, पं. नरेन्द्र जी, भक्त फूलसिंह जी, महात्मा नारायण स्वामी और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को क्या कहेंगे? भोले-भाले धार्मिक लोगों को मूर्ख बनाने का धन्धा बन्द होना चाहिये। यह लीडरी का सस्ता टोटका है, परन्तु है धोखाधड़ी। जिन सभा संस्थाओं को एक बार चिपट गये फिर किसी व्यक्ति का निर्माण न कर सके अब जीवन दानियों की लाटरी जब निकलेगी तो इस नई बानगी का भी पता चल जावेगा।

मैक्समूलर का एक्स-रे- महात्मा मुंशीराम जी ने प्रसिद्ध चर्च-सेवक, सूली व साम्राज्य के वेतनभोगी नौकर मैक्समूलर साहिब के रुग्ण होने तथा निधन पर विचारणीय सम्पादकीय लिखे। दक्षिण के जन्माभिमानी ब्राह्मण जो अपने बन्धुओं की छाया पड़ने से धर्म-भ्रष्ट हो जाते थे, जो अपनों को जन्म की जाति-पाँति के कारण मन्दिरों में प्रविष्ट नहीं होने देते थे- ऐसे कुछ अंग्रेज-भक्त ब्राह्मणों की टोली को मैक्समूलर के रुग्ण होने का पता लगा। डॉक्टरों ने उसके स्वास्थ्य की स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक घोषित कर दी। बचने की आशा तक नहीं थी।

मद्रासी ब्राह्मणों की यह टोली एक बड़े मन्दिर में पहुँची तथा पुजारी से मैक्समूलर की दीर्घ जीवन की प्रार्थना करने की विनय की। उसने कहा, वह हिन्दू नहीं, उसके लिये मन्दिर में प्रार्थना नहीं की जा सकती। प्रार्थना करवाने की इच्छावालों ने कहा, ''वह तो जन्म के हिन्दुओं से भी कहीं बड़ा बढ़िया हिन्दू है।'' दक्षिणा का, भेंट का प्रलोभन भी दिया गया। इस पर पण्डित जी ने अपने पत्थर के भगवान् से मैक्समूलर के रोगमुक्त होने की प्रार्थना करना मान लिया।

मैक्समूलर उस समय तो बच गया। उसने लिखा कि डॉक्टर ने तो रोग fatal (घातक) बताया था, परन्तु मन्दिर के पाषाण देवता के आशीर्वाद से मैं बच गया। हिन्दुओं के पाषाण देवता की झूठी प्रशंसा करके चतुर मैक्समूलर ने हिन्दुओं को अच्छा मूर्ख बनाया। उसके लेख की स्याही अभी सूखी नहीं थी कि मैक्समूलर महोदय चल बसे।

महात्मा मुंशीराम के सम्पादकीय से हमें इस कहानी का पता चला। मैक्समूलर के भक्तों, प्रशंसकों यथा स्वामी विवेकानन्द आदि में से किसी ने उसकी मृत्यु विषयक उसके रुग्ण व निधन विषयक कहानी का उल्लेख नहीं किया। महात्मा मुंशीराम जी ने तभी मैक्समूलर की अन्तिम पुस्तक My Indian Friends 'मेरे भारतीय मित्र' पर भी कुछ लिखा। श्री लक्ष्मण जी जिज्ञासु ने हमारी विनती पर झटपट यह पुस्तक हमें उपलब्ध करवा दी। संयोग की बात है कि मैक्समूलर ने भारत (हिन्दुओं) के विषय पर ही अन्तिम पुस्तक लिखी है।

उसने इस पुस्तक में हिन्दुओं की, हिन्दू धर्म की धज्जियाँ किस चतुराई से उड़ाई है, इस विषय में भी स्वामी विवेकानन्द जी ने एक वाक्य नहीं लिखा। उसने इस पोथी में रमाबाई और नीलकण्ठ शास्त्री दो धर्मच्युत होकर पादरी बने ब्राह्मणों तथा स्वामी विवेकानन्द जी की तो बहुत प्रशंसा की है। श्रीकृष्ण महाराज की निन्दा करने में कोई कमी नहीं छोड़ी। उसने पुराणों की आड़ में श्रीकृष्ण का घोर अपमान करके हिन्दुओं को मुँह दिखाने योग्य नहीं छोड़ा। ऋषि दयानन्द जी की थोड़ी प्रशंसा करके निन्दा भी की है।

हिन्दू समाज व हिन्दुत्व को महिमा-मण्डित करने वाले सज्जन ने इस पुस्तक के उत्तर में आज पर्यन्त कुछ लिखा हो तो कोई कृपालु हमें भी कुछ जानकारी देने की कृपा करें। ऐसे भाई के प्रति कृतज्ञता का प्रकाश करना एक-एक आर्य का कर्त्तव्य बनता है। कोई हमसे पूछ सकता है कि दूसरों को कहते हो आर्यसमाज इस विषय में

क्यों मौन साधे पड़ा रहा?

हमारा विनम्र निवेदन है कि ठीक है कि इस पुस्तक के उत्तर में किसी आर्य ने कोई पुस्तक तो नहीं लिखी, परन्तु हम चुप कहाँ रहे? महात्मा मुंशीराम जी के लेख छपे। परोपकारी में हमने भी कई बार लिखा। अब 'मैक्समूलर का एक्स-रे' (Maxmuller X-rayed) नाम से हमारी एक पुस्तक छपने जा रही है। इसमें इसका उपयुक्त उत्तर दिया जावेगा। इस पुस्तक के दो भाग होंगे। पहले भाग में My Indian Friends का उत्तर होगा और दूसरे भाग में मैक्समूलर की एक और घातक भ्रामक पुस्तक के उत्तर में लिखी गई स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज लिखित एक विद्वत्तापूर्ण विचारोत्तेजक पुस्तक होगी।

होली कैसा मनोरञ्जन! पर्व मनाने का मुख्य प्रयोजन देश में, समाज में उत्साह, स्फूर्ति तथा कर्त्तव्य-भावना पैदा करना होता है। हिन्दुओं में होली मनाने की ऐसी विचित्र रीति है कि प्रतिवर्ष लाखों-करोड़ों रुपये के वस्त्र दूषित होते हैं, रंगों पर अपव्यय होता है और बहुत से लोग झगड़ों के कारण मारे जाते हैं। आर्यसमाज होली मनाने के इस गन्दे ढंग को दूर करने का, सुधार का भरपूर प्रयत्न करता रहा, परन्तु रोग बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की। कोई सत्तर वर्ष पूर्व जनसंघ के मन्त्री तथा प्रधान रह चुके पं. मौलीचन्द्र शर्मा के मुख से इसे 'मनोरञ्जन का पर्व' कहकर अमृतसर में इसकी वकालत सुनी। अजमेर में श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पर रंग फेंका गया तो आपने साधुवेश पर दूसरे रंग को एक दाग माना। रोष व्यक्त किया। अब आर्यसमाज के पत्रों में ही इसे मनोरञ्जन का पर्व बताने वालों ने पं. लेखराम जी से लेकर श्याम भाई तक सब शहीदों के किये कराये पर पानी फेर दिया है। यह आर्यसमाज की पोंगा-पंथियों के सामने पूर्ण पराजय व आत्मसमर्पण नहीं तो क्या है? कहाँ गया वह आर्यसमाज जो बुराइयों से लड़ता-भिड़ता था?

मिर्ज़ाई प्रचार-तन्त्र- देश के विभाजन की घोषणा हुई तो मिर्ज़ाई देश की हत्या में सबसे अधिक सक्रिय थे। क्या ज़फ़रुल्ला और क्या मिर्ज़ा महमूद व मिर्ज़ा बशीर अहमद एम.ए.। 'ख़ालसा होशियार वाश' तथा 'बाउन्डरी कमीशन और सिख' जैसे नाम से इनके खलीफ़ा आदि लिखित सब साहित्य हमने तब पढ़ा।

अब किसी न किसी बहाने प्रेस में चर्चित रहने के लिये बड़ी चतुराई से नये-नये समाचार गढ़ लेते हैं। आज छः अप्रैल के दैनिक अंग्रेजी ट्रिब्यून में Bride from Pak waited to vote in L S poll for 18 years. एक विस्तृत समाचार छपा है। एक मिर्जाई बहू ने जो पाकिस्तान से कादियाँ में ब्याही गई है उसने पाकिस्तान पर संकीर्णता का दोष थोपकर अपनी वोट डालने की कामना पूरी होने पर हर्ष व्यक्त किया। भारतीय पत्रकार व समाचार-पत्र भी व्यापारिक खपत के लिये 'बर्तानवी मसीह' के देश की हत्या करवाने वाले पन्थ के लम्बे-लम्बे समाचार देते हुये न लजाते हैं और न शर्माते हैं। तब देश की हत्या करवाने के इल्हाम कादियाँ में बरसते थे और अब वहाँ जूते पड़ते हैं। काफिर घोषित होने पर भारत में 'प्यार की महामारी' का ये लोग शिकार हो रहे हैं। तब अल्लाह से साँठगाँठ करके भारत विरोधी भविष्यवाणियाँ कादियाँ में सुनाई जाती थीं। अब ऐसे समाचार छपवाकर देश को मूर्ख बनाया जा रहा है। हम इनकी वास्तविकता को जानते हैं।

लेखकों से निवेदन

- लेखक कृपया अपने मौलिक व अप्रकाशित लेख ही भेजें।
- लेखक अपना पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या लेख के साथ अवश्य लिखें।
- परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।
- अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।
- रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।
- स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। -**संपादक**

ऐतिहासिक कलम से....

विज्ञान और धर्म

आचार्य मुंशीराम शर्मा 'सोम'

मानव के पैर चन्द्र के धरातल पर पहुँच गये, विज्ञान की यह सफलता सचमुच सराहनीय है। पर जब वैज्ञानिक, जिन्हें धर्म में अभिरुचि नहीं है तथा जो धार्मिक विश्वासों को मिथ्या, रूढ़िग्रस्त और अनावश्यक समझते हैं, ऐसा कहने लगते हैं कि हिन्दू मुसलमान चन्द्र को जो महत्त्व देते थे वह निरर्थक सिद्ध हो गया, तब विषय चिन्तनीय हो जाता है। वैज्ञानिकों के कथनानुसार पौराणिकता चाहे ग्रीस की हो या कि मिस्र की या अरब की, आज के वैज्ञानिक युग में वह मान्यता प्राप्त नहीं कर सकती।

जिस मत का आधार वैज्ञानिक सिद्धियों के प्रतिकूल है, वह अमान्य है। मुसलमान जिस ईद के चाँद को देखकर अपना त्यौहार मनाते हैं और हिन्दू स्त्रियाँ करवाचौथ के दिन देर रात्रि उदित होते हुए चन्द्र को अर्घ्य देकर अपना व्रत समापन करती हैं, उसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। वह रूढ़ि मात्र है। बुद्धि ऐसे ढकोसलों को स्वीकार नहीं करती। आइये, वैज्ञानिकों की इस तथ्यपरक उक्ति पर विचार करें।

वैज्ञानिक उक्ति की जाँच

वैज्ञानिकों ने जो प्रयोग और परीक्षण किये हैं वे वस्तुगत हैं। उनकी परिधि शरीर या आकृति मात्र तक सीमित है। शरीर के भीतर जो भावनात्मक सूक्ष्म अंश हैं, उसकी ओर इन वैज्ञानिकों का ध्यान नहीं गया। मनोविज्ञान जो अब अपने को दार्शनिक क्षेत्र से निकाल कर वैज्ञानिक क्षेत्र में पैर रखने लगा है, मन की गतिविधियों पर विचार करता है, परन्तु भावना का जगत् उसकी भी पहुँच से परे है। यह उद्वेगों का निरूपण कर सकता है, सुख और दुःख के कारणों की मीमांसा कर सकता है, जागरण और अन्य स्वप्न की दशाओं का विश्लेषण कर सकता है, परन्तु भावभूमि उसके लिये अग्राह्य है।

विज्ञान की कई शाखायें हैं, यथा-भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भू-विज्ञान, नक्षत्र-विज्ञान आदि। अब राजनीति भी अपने को पॉलिटिकल साइंस कहने लगी है। समाज-शास्त्र के रूप में कतिपय सामाजिक विज्ञान (सोशल साइंसेज) पनपने लगे हैं। इनका भी संबन्ध भावना जगत् से नहीं है। तो क्या भावना अपना अस्तित्व नहीं रखती? क्या मानव-विकास में उसका कोई स्थान नहीं है? जिसे हम तत्त्व-दर्शन कहते हैं विज्ञान का उससे भी कोई संबन्ध नहीं है? प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन ने जिस विश्वास को वैज्ञानिक के लिए परिहार्य माना है, वह भौतिकता की सीमा से परे भी कुछ है-ऐसा संकेत देता रहा है। कैनेथ बाकर जैसे कतिपय विद्वान् कल्पना को भी वैज्ञानिक अन्वेषण में स्थान देने लगे हैं। विश्वास भावना पर अवलम्बित है। कल्पना भी भावना का पोषण करता है। अतः भावना और कल्पना का जगत् वैज्ञानिकों को भले ही ढकोसला प्रतीत हो, उनका अस्तित्व है अवश्य। और उस अस्तित्व ने मानवता को आगे बढ़ाया है, इसमें भी सन्देह नहीं। विज्ञान नागरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तो भावना सूक्ष्म जगत् का आधार है और उसका परिष्कार करने वाली भी।

जैसा विचार वैसा मनुष्य

लोकोक्ति है-''जैसा खाये अन्न वैसा बने मन।'' इसी के साथ यह लोकोक्ति भी चलती है मनुष्य जैसा विचार करता है अथवा जैसी उसकी श्रद्धा होती है, वैसा ही वह बन जाता है। इतिहास इस मान्यता के उदाहरणों से भरा पड़ा है। इस्लाम मजहब विश्वास को ही महत्त्व देता है। ईसाई मत वाले तथा अन्य धार्मिक सम्प्रदाय भी विश्वास को जीवन-विकास के लिए आवश्यक मानते हैं। वैज्ञानिक इन्हें अन्धविश्वासी कह सकता है, पर उनका 'अन्धविश्वास' भी किस प्रकार व्यक्तियों तथा जातियों को उन्नत करता है, उन्हें समृद्धिशाली बनाता है, तेज और यश देता है, इसे इतिहास के तथ्यवादी स्वर्णाक्षरों में आज भी पढ़ा जा सकता है।

सूर्य का आधार

सूर्य को लें। उसका जहाँ वैज्ञानिक रूप है, वहाँ एक

दार्शनिक रूप भी है। अपने वैज्ञानिक रूप में वह अग्नि का धधकता हुआ एक गोला है। जिसकी किरणें करोड़ों मील दूर चलकर नाना लोकलोकान्तरों को प्रकाश एवं ऊष्मा पहुँचाती हैं और जीवनी शक्ति की उत्पादिका एवं संवर्धिका बनती हैं। अपने दार्शनिक रूप में वह किसी अन्य शक्ति के द्वारा प्रकाश ग्रहण करता है। जैसे सूर्य का प्रकाश चन्द्र के माध्यम से हम सब पर प्रतिच्छायित होकर अपनी ऊष्मा का परित्याग कर देता है और हमारे मन के लिए आह्लादकारी सिद्ध होता है। वैसे ही कोई अनन्त जीवन स्रोत है, प्रकाश का कोष है अथवा साक्षात् प्रकाश स्वरूप है जिसके प्रकाश से यह सूर्य प्रकाशित होता है और उस प्रकाश को हम तक पहुँचाता है। जो वीर चन्द्रयान से चन्द्र में उतरे, उन्हें वहाँ से पृथ्वी भी वैसी ही हरे रंग में चमकती दिखाई दी जैसा हम सब चन्द्र को यहाँ से श्वेत रूप में चमकता देखते हैं। चन्द्र स्वत: प्रकाशरहित है। पृथ्वी भी प्रकाशरहित है। संभव है, सूर्य भी स्वत: प्रकाशरहित हो, पर जैसे उसके प्रकाश से अन्य ग्रह और उपग्रह प्रकाशित होते हैं वैसे ही वह स्वयं भी किसी अन्य के प्रकाश से प्रकाशित हो सकता है। धार्मिक विश्वास ऐसा ही कहता है। मुण्डक तथा श्वेताश्वतर उपनिषदों की यही मान्यता है।

यूनानी दार्शनिक पाइथागोरस भी सूर्य को तेजोधारक लेन्स मात्र मानता था जिस पर किसी अन्य का प्रकाश प्रतिफलित हो जगत् को प्रकाशित करता है। प्लेटो सूर्य को ईश्वरप्रभा रश्मियों से प्रज्वलित तेज कहता है। सूर्य प्रकाश का फोकस है जो उस मूल ज्योति की किरणों को लेन्स के रूप में सौर जगत् के लोकों तथा प्राणियों तक पहुँचाता है। मूल ज्योति सूक्ष्मतम और एक है। सूर्य की किरणें अनन्त हैं–**''एक रूपं बहुधा य: करोति''** वह महाज्योति दिव्य शक्ति ही अपनी एक ज्योति को नाना किरणों में फैला देती है।

मानव बुद्धि का स्वरूप

मानव शरीर में बुद्धि सूर्य की स्थानीय है। जैसे सूर्य को परमात्मा प्रकाश देता है वैसे ही बुद्धि को विज्ञानात्मा या जीवात्मा। नाना किरणों के पुंज सूर्य भी इस ब्रह्माण्ड में अनेक हैं। इनमें से किसी–किसी का प्रकाश तो हम पार्थिव प्राणियों तक करोड़ों तथा अरबों वर्षों में पहुँच पाता है और सम्भव है किसी–किसी का प्रकाश तो अब तक हम तक पहुँचा ही न हो।

इन सूर्यों के प्रकाश भी हमारे सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि की भाँति विभिन्न रूप रंग वाले हैं। किसी का प्रकाश पीला है। किसी का बैंगनी है तो किसी का पुखराजी।

विज्ञान ने चन्द्र तक पहुँचा दिया, परन्तु सूर्य अभी पहुँच से परे है। संभव है, वहाँ पहुँच भी न हो सके। तब वैज्ञानिकों को कौन बता सकेगा कि यह सूर्य अपना प्रकाश कहाँ से ग्रहण कर रहा है? दर्शन और विज्ञान की बात जाने दीजिए, मानवता के स्वरूप का आकलन कीजिए तो आप देखेंगे कि जैसे सूर्य शरीर में प्राणों का संचार करता है वैसे ही चन्द्र मन को आह्लादित करता है। वैज्ञानिकों का चन्द्र उन्हें कुछ गीली मिट्टी दे देगा जिसके कण हमारे वातावरण में आते ही वाष्प का रूप धारण करके उड़ जायें। वह अपनी चट्टानों से संभव है कुछ मोती भी दे सके, पर अनन्त काल से चन्द्र अपनी ज्योत्स्ना द्वारा मानव मन को जो आह्लाद देता आया है उसे कोई कैसे झुठला सकता है। पूर्णिमा के चन्द्र को देखते ही जड़ सागर के जल में लहरों का ज्वार उठ सकता है। चेतन मानव के मन में भी उसे देखकर यदि भावनाओं का सागर उमड़े तो वैज्ञानिक को उस पर क्यों आपत्ति करनी चाहिए।

सूर्य और चन्द्र का प्रभाव

यजुर्वेद का पुरुष सूक्त चन्द्रमा को यज्ञ पुरुष के मन से उत्पन्न मानता है। सूर्य की उत्पत्ति उसके अनुसार यज्ञ पुरुष के चक्षु से है। चक्षु और सूर्य का सम्बन्ध वैज्ञानिक भी मानने लगे हैं। मन का और चन्द्रमा का भी सम्बन्ध है, इसे साहित्यिक अथवा कवि तो स्वीकार करते ही हैं, मनोवैज्ञानिक भी करेंगे। चन्द्र के धरातल की वैज्ञानिक प्रक्रिया चाहे जो हो, परन्तु उसकी कौमुदी विश्व भर के लिए मोहिनी बनी हुई है। औषधियों में वही रस का संचार करती है, प्रेम पुलकावली उसी के द्वारा उठकर न जाने कितने प्राणियों को तृप्ति प्रदान करती है। शुक्ल पक्ष में क्रमश: बढ़ती हुई वह कतिपय लताओं को पर्णदान देती है, तो कृष्ण पक्ष में वह क्रमश: उन्हें पर्णविहीन भी करती है। सूर्य दिन के समय यदि पुष्पों में रंग भरता है जो मानव

मन पर अपने आकर्षण का जादू डालते रहते हैं, तो संध्या के समय उन्हें फीका भी कर देता है। चन्द्र रात्रि के समय जहाँ चकोर को आप्यायित करता है वहाँ चकवा चकवी को वियुक्त भी करता है। सुख-दु:ख की मीमांसा मनोवैज्ञानिक क्षेत्र का विषय है, पर मन किसी वस्तु की अनुकूलता और प्रतिकूलता का वरण क्यों और कैसे करता है, इसे वैज्ञानिक विश्लेषण के उपरान्त भी यदि भावना का जगत् अव्याख्यात रहता है तो इसमें किसका दोष है? चन्द्र मन को अथवा सूक्ष्म जगत् को अपनी चाँदनी द्वारा प्रभावित करता रहेगा।

विज्ञान और धर्म का सामंजस्य

विज्ञान का क्षेत्र धर्म से भिन्न है। काव्य क्षेत्र से भी भिन्न है। एक का आधार बुद्धि है, तो दूसरे का आधार भाव और विश्वास है। एक वस्तुपरक परीक्षण करेगा तो दूसरा भावपरक विधाओं का विन्यास। मानव को दोनों की आवश्यकता है। उसे बुद्धि द्वारा भौतिक जगत् में प्रगति करनी है, तो काव्य द्वारा भाव जगत् में प्रवेश करना है और धर्म द्वारा आत्मोत्थान भी करना है। एक अभ्युदय का सम्पादन करता है तो दूसरा नि:श्रेयस की सिद्धि देता है। वैसे धर्म व्यापक है। वह विज्ञान को भी अपने गर्भ के अन्तर्गत स्थान देता है, वैसे ही जैसे वह काम और अर्थ को धारण किये हुए है। वह विज्ञान की अवहेलना नहीं करता। उसे सहायक समझता है। यदि विज्ञान भी धर्म को साथ लेकर चले तो सोने पे सुहागे की कहावत चरितार्थ होने लगेगी।

आर्यजगत् अप्रैल १९८१ से साभार।

जीवन क्या है?

सुधा सावन्त

कई बार मन में यह विचार आता है कि हम समझें यह हमारा जीवन क्या है? क्यों कहते हैं कि मानव जीवन सर्वश्रेष्ठ है? जबकि देखते हैं, हर जगह लड़ाई-झगड़ा है, अविश्वास है, अत्याचार है। कभी-कभी मन बहुत अशान्त हो जाता है कि क्यों हमने यह सर्वश्रेष्ठ समझा जाने वाला जीवन यों ही व्यर्थ गँवा दिया, कुछ भी हाथ नहीं लगा। फिर लगता है हमारी सोच इतनी नकारात्मक नहीं होनी चाहिए। यह संसार है। प्राचीन काल से अब तक बहुत उन्नति हुई है। अनेक महान् व्यक्ति हुए हैं, उन्होंने अच्छे-अच्छे काम किए हैं। हमने भी अच्छी तरह से पढ़ाई-लिखाई की, विद्यालयों में विद्यार्थियों को ठीक से पढ़ाया समझाया। उनका भी जीवन सँवारा। तब निराशा क्यों? बचपन में पढ़ी एक कविता याद आती है-

जीवन क्या है?
झरना है, मस्ती ही इसका पानी है!
सुख-दु:ख के दोनों तीरों से,
चल रहा राह मनमानी है।
कभी एक गीत दिमाग में आ जाता है-
जिन्दगी कैसी है पहली हाय!
कभी ये हँसाये कभी ये रुलाए।

फिर लगता है ये सब तो कवियों के अपने व्यक्तिगत उद्‌गार हैं। अपनी बुद्धि से सोचने पर लगता है कि जीवन परमपिता परमात्मा द्वारा दिया गया 'समय' है। मानव रूप में मिला यह 'समय का वरदान' है। इस जीवन काल में ईश्वर ने हमें सर्वश्रेष्ठ बुद्धि दी है। इस सद्‌बुद्धि के सहारे हम अपने समय का सदुपयोग करें, तो समझो हमने सफल जीवन बिताया। इससे हमें आत्मसन्तोष मिलेगा। यदि आत्मसन्तोष न मिले तो समझो अभी भी समय बाकी है। हम कुछ अच्छा क्रियात्मक सोचें और उसी आदर्श के अनुसार काम करते हुए समय बिताएँ। जीवन में सुधार आता जाएगा।

आइए देखें, हमें किसका जीवन ऐसा लगता है कि उन्होंने ठीक से अपना 'समय' बिताया। वे हमारे लिए आदर्श हैं। हम मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को लें या योगेश्वर श्रीकृष्ण को लें। हम उन्हें भगवान् मानकर उनके मन्दिरों में जाकर प्रसाद चढ़ा कर सन्तुष्ट हो जाते हैं, परन्तु हमें चाहिए कि हम उनके कार्यों से सीख लें। जैसे उन्होंने बुराई का नाश किया स्वयं शक्तिशाली बनकर दीन-दुर्बलों

की रक्षा की और स्वार्थ त्याग कर जनहित में कार्य किए, तो हम भी कुछ ऐसे ही कार्य करें। ध्यान देने योग्य बात है कि ये महान् विभूतियाँ जीवन की कठिन परिस्थितियों में भी निराश नहीं होती थीं। वे सब हमें हिम्मत न हारने की सीख देते हैं। कठिन परिस्थितियाँ तो सभी के जीवन में आती हैं, परन्तु हमें उन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

आप कहेंगे कि वे तो अलौकिक दिव्य पुरुष थे। हम तो सामान्य से इन्सान हैं। तो आप आदिगुरु शंकराचार्य को लीजिए, सरदार पटेल या लाल बहादुर शास्त्री जी को लीजिए। वीर सावरकर, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, नेता जी सुभाष किसी को आदर्श मान लीजिए और देशहित में कार्य कीजिए। आप किसी के भी जीवन से प्रेरणा ले सकते हैं। सभी ने कठिन परिस्थितियों का सामना किया, कष्ट सहे, परन्तु हिम्मत नहीं हारी। अपने लक्ष्य को प्राप्त किया और आज उनका जीवन हमारे लिए आदर्श बन गया है। हम भी वैसा कुछ कर सकते हैं।

चलिए, मान लेते हैं कि हम ऐसे ऊँचे आदर्श नहीं रख पाते हैं, तो अपनी वैदिक परम्परा का पालन कीजिए। विद्या आरम्भ करने से पहले 'उपनयन संस्कार' या 'यज्ञोपवीत संस्कार' होता है। हम यज्ञोपवीत धारण करते हैं। इस यज्ञोपवीत के तीन धागे हमें तीन ऋण चुकाने के लिए प्रेरित करते हैं। ये तीन ऋण हैं- पितृ ऋण, ऋषि ऋण और देव ऋण। पितृऋण से उर्ऋण होने के लिये माता-पिता की सेवा करके उनके उपकार का ऋण चुकायें तथा वृद्धावस्था में हम माता-पिता की देखभाल करें। वृद्धावस्था में हम उनका सहारा बनें। दूसरा ऋण ऋषि ऋण है। गुरुजनों ने हमें पढ़ा-लिखा कर ज्ञान से समृद्ध किया तो हम भी गुरुजनों का आदर करें और जो ज्ञान हमने उनसे प्राप्त किया है उसे समाज में अन्य लोगों में बाँटें, आने वाली पीढ़ियों को दें। इसी प्रकार देव ऋण है। ईश्वर ने हमें इतना कुछ दिया है। पृथ्वी जल, अग्नि, वायु, आकाश। हम भी इनकी सुरक्षा का प्रयत्न करें, इन्हें स्वच्छ रखें। यदि हम अपने जीवन में इतना कुछ कर लें, तो समझो, हमारा जीवन सार्थक हुआ।

हम ईश्वर के प्रति आस्थावान् बनें। ईश्वर द्वारा रची गई इस सृष्टि को अधिक सुन्दर व आकर्षक बनाएँ। यज्ञादि धार्मिक क्रियाएँ करें व परोपकार करते हुए जियें। इस प्रकार हम सकारात्मक सोच रखते हुए, परहितकारी कार्य करते हुए, आत्मसन्तोषपूर्वक जी सकते हैं।

जीवन ठीक से बिताया या नहीं, इसका मूल्यांकन करने का एक अन्य उपाय भी है। हम अपने जीवन का कोई उद्देश्य निर्धारित करें और उसे प्राप्त करने का अथक प्रयास करें। क्योंकि हमारा जीवन केवल मौज-मस्ती के लिए, केवल खाने-पीने के लिए तो नहीं है।

वैदिक विचारधारा के अनुसार हमें यह जीवन आत्म-साक्षात्कार करने के लिए मिला है। आत्म-साक्षात्कार हमारा परम लक्ष्य है। हम यह अनुभव कर सकें कि हम केवल शरीर नहीं हैं। यह शरीर तो रथ के समान है और 'आत्मा' या चेतन तत्त्व इस शरीर में 'यात्री' के समान है और हमारा लक्ष्य होना चाहिए इस चेतन तत्त्व की, 'आत्मा' की अनुभूति करना। यही सत्य ऋषि याज्ञयवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी के सम्मुख स्पष्ट किया था। मैत्रेयी ने जब ऋषि से पूछा कि ऐसा कौन सा ज्ञान है जिसे जान लेने के बाद सब कुछ ज्ञात हो जाता है और मृत्यु का भी भय नहीं रहता। तो ऋषि ने उत्तर दिया था-

आत्मा वा अरे दृष्टव्यः, श्रोतव्यः,
मन्तव्यः, निदिध्यासितव्यः

आत्मा का ज्ञान ही सर्वोपरि है।

अतः हम सभी मननशील मनुष्यों को चाहिए कि आत्मज्ञान प्राप्त करने में ही हम अपने जीवन की सार्थकता समझें। क्योंकि आत्मरूप के ज्ञान के अतिरिक्त दुःखों से छूटने का कोई अन्य उपाय नहीं है-

''ना अन्यः पंथा विद्यते अयनाय''

६०९, सैक्टर २९, नोएडा।

जब तक सबकी रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्ष सुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

मनुष्य शाकाहारी या मांसाहारी, निर्णय कैसे करें?

डॉ. भूपसिंह

कभी तो डॉक्टर व वैज्ञानिक पशु-प्रोटीन के नाम पर भोजन में मांस-मछली-अंडे की सिफारिश करते हैं। वही लोग कोलेस्ट्रॉल बढ़ने से हृदय रोग व रेशा तत्त्व न होने के कारण पेट के रोगों का कारण मांसाहार बताते हैं। एक तरफ परिस्थितीय (Ecology) सन्तुलन के लिए जीवों की हत्या न करने की बात कही जाती है, वहीं आमदनी व भोजन-आपूर्ति के लिए बूचड़खाने खोलकर बेरहमी से करोड़ों-करोड़ों पशुओं का कत्ल कर दिया जाता है। आमजन से लेकर प्रबुद्धजनों तक मांसाहार-शाकाहार की बात पर इधर-उधर डोलते नजर आते हैं। कोई शाकाहार का धार्मिक आधार लिए हुए हैं तो मांसाहारी तथाकथित विज्ञान का सहारा लेते हैं। कोई शाकाहार को सस्ता कहता है तो दूसरे भोजन की उपलब्धता का रोना रोते हैं। पक्ष-विपक्ष में तरह-तरह के तर्क दिये जाते हैं। हवा-पानी के बाद भोजन का स्थान है। हवा-पानी साफ होना चाहिए, यह तो धरती पर रहने वाले सभी मनुष्यों ने मान लिया, पर भोजन शाकाहार या मांसाहार हो, इस विषय में धरती का मानव बँटा हुआ है। भोजन क्योंकि जीवन का आधार है तो इस अति महत्त्वपूर्ण विषय में स्पष्टता होनी अति अनिवार्य है। इस विषय में स्पष्ट निर्णय कौन देगा? डॉक्टर, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री या धर्मगुरु। हम उपरोक्त में से किसी का निर्णय अन्तिम नहीं मान सकते। कारण यह कि मनुष्य चाहे कोई हो उसकी जानकारी पूर्ण व अचूक नहीं हो सकती। दूसरे, मनुष्य की ईमानदारी सन्देह से परे नहीं हो सकती और विशेष कर वर्तमान समय में तो मनुष्य की ईमानदारी लगभग पंगु है ही। तो कौन करेगा इसका निर्णय? किससे पूछें इसका सही उत्तर?

इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें कुछ मौलिक बातों पर ध्यान देना होगा। पहली बात यह कि किसी यन्त्र के बारे में उसको बनाने वाला यन्त्र को प्रयोग करने वाले से ज्यादा जानता है। उदाहरण के लिए एक कम्प्यूटर या मोबाइल के बारे उसको बनाने वाले हार्डवेयर इंजीनीयर जिसे एक-एक सर्किट में लगे कम्पोनेंट की जानकारी है, कम्प्यूटर या मोबाइल का प्रयोग करने वाले ऑपरेटर से ज्यादा जानकारी रखता है। एक इंजन के बारे में उसको बनाने वाला इंजीनियर, इंजन ड्राइवर से ज्यादा जानता है। दूसरी मौलिक बात यह है कि प्रत्येक यन्त्र का अपना ईंधन होता है जिसको उस यन्त्र का बनाने वाला निर्धारित करता है। यह ईंधन क्या हो, यह यन्त्र की बनावट पर निर्भर करेगा। तीसरी बात यह कि यदि मशीन को उसके निर्धारित ईंधन से चलाते हैं तो वह अच्छा कार्य करेगी और देर तक काम करती रहेगी। यदि उपयुक्त ईंधन नहीं होगा तो मशीन कम काम करेगी और शीघ्र खराब हो जाएगी। हम शाकाहार-मांसाहार का उत्तर इन्हीं मौलिक बातों को ध्यान में रखकर ढूँढेगे।

यदि आप आस्तिक हैं, तो यह मानेंगे कि सभी शरीरों (चींटी से मनुष्य पर्यन्त) का निर्माण ईश्वर ने किया है। भिन्न-भिन्न शरीर किसी डॉक्टर-वैज्ञानिक या धर्मगुरु ने नहीं बनाये। यदि आप नास्तिक हैं, तो कहेंगे कि सभी शरीरों का निर्माण प्रकृति ने किया है। ईश्वर या प्रकृति को अपने बनाये शरीर रूपी यन्त्र की जानकारी किसी डॉक्टर-वैज्ञानिक-धर्मगुरु से ज्यादा होगी और अचूक होगी, यह मानने में किसी मनुष्य को मतभेद नहीं होना चाहिए। तो हम अपने प्रश्न का उत्तर ईश्वर या प्रकृति से पूछेंगे। ईश्वर या प्रकृति ने तो मानव को भी बनाया है, फिर क्या मानव से न पूछें? नहीं। क्योंकि मानव की ईमानदारी सन्देहास्पद है। हम ईश्वर या प्रकृति के बनाये गाय, बकरी, घोड़ा, ऊँट, शेर, चीता, भेड़िया, तेंदुआ इनसे उत्तर पूछेंगे क्योंकि ये जानवर बेईमान नहीं होते, अपनी मर्यादा को नहीं भूलते। क्योंकि जानवरों व मनुष्य का शरीर ईश्वर या प्रकृति ने बनाया है और सभी शरीरों का भोजन शाकाहार या मांसाहार निश्चित किया है। अब जैसा कि पहले कहा गया है यन्त्र का ईंधन (जीवित शरीर के लिए उसका भोजन) उसकी बनावट के अनुसार निर्धारित किया जाता है तो सीधी-सी बात हुई कि हम मानव अपने शरीर की बनावट देखें कि वह शाकाहारियों से मेल खाती है या

मांसाहारियों से। यह तुलना हमें स्पष्ट बता देगी कि हमारा भोजन क्या है–

१. सभी शाकाहारी प्राणियों के पाचनतन्त्र की लम्बाई उनके शरीर की लम्बाई से पाँच–छः गुणा रहती है जबकि मांसाहारियों के पाचनतन्त्र की लम्बाई उनके शरीर की लम्बाई का दो–अढ़ाई गुणा होती है।

२. मनुष्य का पाचनतन्त्र उसके शरीर की लम्बाई से पाँच–छः गुणा लम्बा है क्योंकि लम्बे पाचनतन्त्र में भोजन लम्बे समय तक रहेगा। शाकाहारी भोजन में कार्बोहाइड्रेट होने के कारण उसमें दुर्गन्ध नहीं होगी। मांसाहार में लम्बे समय के कारण दुर्गन्ध पैदा हो जाती है इसलिए मांसाहारियों का पाचनतन्त्र अपेक्षाकृत छोटा होता है।

३. सभी शाकाहारियों में भोजन का पाचन मुँह से शुरू हो जाता है। मुँह से क्षारीय लार भोजन में मिलती है और कार्बोहाइड्रेट का पाचन शुरू हो जाता है। मांसाहारियों के मुँह की लार अम्लीय होती है और मुँह से पाचन शुरू नहीं होता। यही कारण है कि शाकाहारी भोजन को मुँह में रखकर अच्छी तरह चबा कर खाते हैं जबकि मांसाहारी भोजन को शीघ्र निगल लेते हैं।

४. शाकाहारियों को भोजन अच्छी प्रकार चबाना आवश्यक है, इसलिए ठीक प्रकार से चबाने के लिए शाकाहारियों का जबड़ा ऊपर–नीचे व बायें–दायें चलता है जबकि मांसाहारियों का जबड़ा केवल ऊपर–नीचे ही चलता है। खाते समय मांसाहारियों का मुँह खुलता व बन्द होता है जबकि शाकाहारियों का मुँह बन्द रहता है।

५. शाकाहारियों के भोजन का पाचन मुँह से शुरू होता है इसलिए भोजन अच्छी तरह पीसने की आवश्यकता होती है जबकि मांसाहारियों को केवल भोजन निगलना होता है इसलिए शाकाहारियों के दाँत चपटे होते हैं और मांसाहारियों के दाँत मांस फाड़ने के लिए नुकीले होते हैं।

६. मांसाहारियों की जीभ शाकाहारियों की जीभ से लम्बाई में कम व आगे से पतली व चपटी होती है। जिससे वे पानी पीने व हाँफते समय ठंडक पैदा करने का काम लेते हैं जबकि शाकाहारियों की जीभ अपेक्षाकृत लम्बी–मोटी व गोलाइदार होती है जो भोजन को पलटने के काम आती है और आगे से चौड़ाई में कम होती है।

७. मांस में प्रोटीन व वसा ही होता है जबकि शाकाहार में प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट व खनिज लवण होते है। इसलिए मांसाहारियों की जीभ पर स्वाद को जानने के उभार (taste buds) संख्या में कम होते हैं (५००–१०००), जबकि शाकाहारियों में इनकी संख्या अधिक होती है (१५०००–२५०००)। मनुष्य की जीभ पर इनकी संख्या लगभग २०,००० होती है।

८. मांसाहारियों के भोजन का पाचन पेट से आरम्भ होता है और कार्बोहाइड्रेट ओर वनस्पति, वसा व प्रोटीन के मुकाबले मांस की वसा व प्रोटीन को घोलने के लिए पेट में तेज पाचक रसों की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि मांसाहारियों के पेट के पाचक रस मनुष्य के पाचक रसों से दस–बारह गुणा तेज होते हैं।

९. मांसाहारियों का पेट एक कक्षीय (single chamber) होता है। जबकि शाकाहारियों का पेट बहु कक्षीय (multi chambered) होता है। मनुष्य के पेट के भी दो कक्ष होते हैं।

१०. शाकाहारियों की आंतें कुण्डली–आकृति व घुमावदार होती हैं और इनमें बहुत से मोड़ होते हैं जबकि मांसाहारियों की आतें पाइप की तरह सीधी होती हैं। मनुष्य की आतें घुमावदार व मोड़ वाली होती हैं।

११. मांसाहारियों की बड़ी व छोटी आँत की लम्बाई व चौड़ाई में ज्यादा अन्तर नहीं होता जबकि शाकाहारियों की छोटी आँत बड़ी आँत से बहुत लम्बी व पतली होती है। मनुष्य की छोटी आँत भी बड़ी आँत से बहुत लम्बी व पतली होती है।

१२. शाकाहारियों की आँतों में कार्बोहाइड्रेट के स्टार्च व सेलुलोज वाले घटकों को पचाने के लिए किण्वन क्रिया करने के लिए (Fermenter Bacteria) होते हैं जबकि मांसाहारियों की आँतों में ये नहीं होते।

१३. शाकाहारियों के पाचनतन्त्र की लम्बाई ज्यादा होती है और आँतें घुमावदार और मोड़ वाली होती हैं इसलिये शाकाहारी भोजन में कार्बोहाईड्रेट होता है ताकि दुर्गन्ध न हो और रेशा तत्त्व होता है ताकि भोजन अंतड़ियों में रुक न जाये। मांसाहार में कार्बोहाइड्रेट नहीं होता और रेशा तत्त्व भी नहीं होता। इसलिए शाकाहारी यदि मांसाहार

करता है तो आंतड़ियों में दुर्गन्ध और रुकावट हो जाती है। इसलिए मांसाहारियों के मल-मूत्र में दुर्गन्ध होती है जबकि शाकाहारियों के मल-मूत्र में दुर्गन्ध नहीं होती। यदि मनुष्य का पाचन ठीक हो तो मलमूत्र में दुर्गन्ध बहुत कम होगी।

१४. मांसाहार में केवल वसा और प्रोटीन होता है और प्रोटीन के पाचन के फलस्वरूप बहुत मात्रा में यूरिक एसिड व यूरिया बनता है। ज्यादा मात्रा में यूरिया व यूरिक एसिड को खून से हटाने के लिए बड़े गुर्दों की आवश्यकता होती है। इसलिए मांसाहारियों के गुर्दे शाकाहारियों के गुर्दों से बड़े होते हैं।

१५. मांसाहारी जानवरों की आँखें गोल होती हैं जबकि शाकाहारी जानवरों की आँखें लम्बी होती हैं। मांसाहारियों के बच्चों की आँखें जन्म के कुछ दिन बाद खुलती हैं जबकि शाकाहारी जानवरों के बच्चों की आँखें जन्म के साथ ही खुल जाती हैं। मनुष्य के बच्चे की आँखें जन्म के साथ ही खुलती हैं। मांसाहारियों की आँखें अन्धेरे में चमकती हैं और अन्धेरे में देख लेती हैं जबकि शाकाहारी अन्धेरे में देख नहीं सकते।

१६. मांसाहारियों को पसीना नहीं आता जबकि शाकाहारियों को पसीना आता है।

१७. मांसाहारी तरल पदार्थ को चाट कर पीते हैं जबकि शाकाहारी तरल पदार्थ को घूंट भर कर पीते हैं।

१८. मांसाहारियों के पंजों के नाखून गोल नुकीले और मजबूत होते हैं क्योंकि शिकार करने में काम आते हैं जबकि शाकाहारियों के पंजों के नाखून चपटे होते हैं। मनुष्य के नाखून चपटे हैं।

१९. मांसाहारी मुँह खोलकर और जीभ निकालकर हाँफते हैं, शाकाहारी जीभ निकालकर नहीं हाँफते।

२०. मांसाहारियों के पाचन संस्थान में पाचन के समय ऊर्जा प्राप्त करने के लिए अलग प्रकार के प्रोटीन उपयोग में लाये जाते हैं जो शाकाहारियों से भिन्न हैं।

२१. मांसाहारी प्राणी अपनी पीठ पर बोझ नहीं ढो सकते, परन्तु शाकाहारी अपनी पीठ पर भार ढो सकते हैं। मनुष्य पीठ पर भार ढो सकता है।

२२. मांसाहारी कम पानी पीते हैं जबकि शाकाहारी ज्यादा पानी पीते हैं। मनुष्य शरीर के अनुपात में किसी भी मांसाहारी से ज्यादा पानी पीता है।

२३. मांसाहारी जानवर शिकार को भयभीत करने के लिए गुर्राते हैं। जबकि शाकाहारी जानवर गुर्राते नहीं।

२४. मांसाहारियों का प्रसवकाल (बच्चे को पैदा करने में लगा समय) लगभग तीन-चार महीने का होता है जबकि शाकाहारियों का प्रसव काल छः महीने से डेढ़ वर्ष तक का होता है। मनुष्य का प्रसवकाल शाकाहारियों की श्रेणी का होता है।

२५. मांसाहारियों के शरीर का तापमान शाकाहारियों से कम होता है क्योंकि मांसाहारियों का B M R (Basic metabolic Rate) शाकाहारियों से कम होता है। मनुष्य के शरीर का तापमान शाकाहारियों के आस-पास होता है।

२६. मांसाहारियों की आयु शाकाहारियों से कम होती है। मनुष्यों में भी शाकाहारियों की आयु मांसाहारी मनुष्यों की अपेक्षा अधिक होती है।

२७. मांसाहारियों की घ्राणशक्ति शाकाहारियों की तुलना में अधिक होती है। मनुष्य की घ्राणशक्ति शाकाहारियों में दूसरे शाकाहारियों से कम ही होती है।

अभी कुछ समय पहले शिक्षा-विभाग की पत्रिका 'शिक्षा-सारथी' में आयरन की पूर्ति के लिए गोमांस की सिफारिश की गई है। डॉक्टर लोग विटामिन बी-१२ के लिये मछली के तेल की सिफारिश भी करते हैं। भले ही वैज्ञानिक विश्लेषण में गोमांस में आयरन व मछली तेल में विटामिन बी-१२ पाया गया हो, परन्तु आयरन व बी-१२ की पूर्ति के लिये गोमांस व मछली के सेवन की या इनसे प्राप्त गोलियों के सेवन की सिफारिश अवैज्ञानिक है। हम धार्मिक व आस्था के पक्ष को छोड़ भी दें तो भी इन कमियों की पूर्ति गोलियों के माध्यम से करना ऐसा ही है जैसे गोबर की कम्पोस्ट खाद को छोड़कर रासायनिक खादों का प्रयोग करके जमीन को बंजर बना डालना। दूसरे, आयरन व विटामिन की पूर्ति करने वाले बहुत से खाद्य पदार्थ हैं जिनके सेवन से न केवल किसी विशेष पोषक तत्त्व की पूर्ति होगी अपितु दूसरे बहुत सारे पोषक तत्त्व भी शरीर को उपलब्ध होंगे। जिन बच्चों व वयस्कों में आयरन व बी-१२ की कमी नहीं है क्या उन्होंने ये पोषक

तत्त्व गोमांस व मछली से प्राप्त किये हैं? तो इस प्रकार की डॉक्टरों या वैज्ञानिकों द्वारा की गई सिफारिशें एकपक्षीय होने के कारण छोड़ देनी चाहिएँ और ऐसी अधूरी वैज्ञानिक रिपोर्टों को पुस्तक-पत्रिकाओं में स्थान देना उचित नहीं है। शरीर को सभी पोषक तत्त्व संतुलित आहार से ही मिल सकते हैं और संतुलित आहार शाकाहार ही हो सकता है मांसाहार किसी रूप में भी नहीं। तो प्रत्यक्ष-परोक्ष मांसाहार की सिफारिश अवैज्ञानिक है।

उपरोक्त तुलना करने पर स्पष्ट रूप से मानव शरीर की बनावट शाकाहारी है, मांसाहारी बिल्कुल नहीं है अर्थात् ईश्वर या प्रकृति ने मानव का भोजन शाकाहार बनाया है, मांसाहार नहीं। हमें भोजन के सम्बन्ध में किसी डॉक्टर, वैज्ञानिक, धर्मगुरु की बात मानने की अपेक्षा ईश्वर या प्रकृति की बात माननी चाहिए, क्योंकि ईश्वर या प्रकृति से बड़ा तटस्थ डॉक्टर, वैज्ञानिक, धर्मगुरु कोई भी नहीं हो सकता।

इस सम्बन्ध में एक बात और स्पष्ट कर देनी आवश्यक है। कुछ लोग अण्डे को मांसाहार नहीं मानते। इस सम्बन्ध में दो बातें विचारणीय हैं। पहली बात यह कि यदि अण्डे को खाया ना जाये और मुर्गी के पास छोड़ दिया जाये तो छः-सात दिन में उससे चूजा निकलेगा। इसका मतलब हुआ अण्डा मुर्गी का भ्रूण है। दूसरी बात यह है कि शाकाहारी भोजन में (अन्न, दाल, सब्जी, फल, मेवा, दूध) कार्बोहाइड्रेट अनिवार्य रूप से होता है जबकि अण्डे में कार्बोहाइड्रेट बिल्कुल नहीं होता, इसलिए अण्डा शाकाहार न होकर मांसाहार की श्रेणी में आता है। जन साधारण को भ्रमित करने के लिए एक धारणा का प्रचार और किया जाता है कि मनुष्य शरीर को मांस-प्रोटीन की आवश्यकता होती है और मांस खाने से शरीर को शाकाहार से अधिक शक्ति मिलती है। पहली बात तो यह कि मांस प्रोटीन ज्यों की त्यों मानव शरीर के प्रोटीन में नहीं बदलती अपितु मांस-प्रोटीन का पाचन होने के बाद वह शरीर का भाग बनती है। मांस-प्रोटीन के अणु वनस्पति प्रोटीन के अणुओं से काफी बड़े होते हैं। पाचन-क्रिया के दौरान उनको छोटे अणुओं में तोड़ा जाता है, फिर शरीर अपनी आवश्यकता अनुसार छोटे अणुओं को मिलाकर शरीर उपयोगी प्रोटीन बनाता है। यह सीधी-सी बात है कि शरीर के बड़े टुकड़े को तोड़-तोड़ कर दीवार बनाने की अपेक्षा ईंटों द्वारा दीवार बनाना ज्यादा सरल है। अर्थात् शरीर को होने वाला लाभ इस बात पर निर्भर नहीं करता कि क्या खाया या कितना खाया, अपितु यह इस बात पर निर्भर है कि खाया हुआ भोजन कितना हजम हुआ। जहाँ तक शारीरिक शक्ति का प्रश्न है तो क्या बलशाली बैल, घोड़े, ऊँट, हाथी को शक्ति मांसाहार से मिलती है? क्या इनकी मांसपेशियाँ कम पुष्ट होती हैं? यह प्रचार भी सरासर गलत है कि मांस खाने व शराब पीने से व्यक्ति बहादुर व निडर बनता है। मांस-शराब के सेवन से व्यक्ति बहादुर तो नहीं निर्दयी व उत्तेजित जरूर होता है। गहराई से देखा जाए तो शराब मांस का पक्ष वही लोग लेते हैं जिन्हें शरीर-विज्ञान का कुछ भी पता नहीं होता या फिर जो मांसलोलुप हैं।

इतना स्पष्ट होने पर भी यदि कोई व्यक्ति यह कुतर्क करता है कि मनुष्य का भोजन मांसाहार भी है तो उस कुतर्की को मैं यह कहना चाहूँगा कि यदि मांसाहार मनुष्य का भोजन है तो मनुष्य को मांसाहार के सहारे जीवित रहना चाहिए। मैं दुनिया के किसी भी व्यक्ति को चैलेंज करना चाहूँगा कि वह केवल और केवल मांसाहार के सहारे चार महीने जीवित रह कर दिखा दे, तो मैं मांसाहार को मनुष्य का भोजन मानने को तैयार हूँ, क्योंकि भोजन वह है जो हमें जीवित रखता है। जो पदार्थ जीवित न रख सके वह भोजन कैसे हो सकता है?

यह धरती केवल मनुष्य के लिए नहीं है। सभी जीवधारियों का धरती पर रहने का अधिकार मनुष्य के बराबर है। अपनी दुर्बुद्धि के कारण मनुष्य मांसाहार करके व जीव हत्या करके पाप का भागी न बने, नहीं तो मनुष्य इस पाप का फल भोगने से बच नहीं सकता। क्योंकि मनुष्य का सामर्थ्य ईश्वर व प्रकृति के सामने कुछ भी नहीं है और कर्म-फल देना ईश्वर के अधीन है, मनुष्य के अधीन नहीं है। यह निश्चित जानें इसी में मानव की भलाई है।

उपरोक्त विवेचना शरीर के साथ भोजन के सम्बन्ध के बारे में है। हमारा भोजन क्या हो-इससे सम्बन्धित कुछ और पहलू भी हैं जैसे आर्थिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक व

पर्यावरण आदि। उदाहरण के लिए एक किलो सब्जी के लिए १२० लीटर, फल के लिए १५० लीटर, दूध के लिए ४८० लीटर, गेहूँ के लिए ३५० लीटर और मांस के लिए ५००० लीटर पानी, ८ किलोग्राम अनाज व ७० किलोग्राम भूसा चाहिए। इतने पानी और भूमि से गई गुणा शाकाहारी भोजन तैयार किया जा सकता है अर्थात् मांसाहार कई गुणा महंगा है। वैसे भी एक किलोग्राम मांस से ज्यादा-से-ज्यादा दिन भर में तीन व्यक्तियों का पेट भर सकता है जबकि मांस को पैदा करने के लिए औसतन ७-८ किलोग्राम अनाज खर्च होता है। जो कि १७-१८ व्यक्तियों का पेट भरने के लिए पर्याप्त है। किसी भी जीवधारी की हत्या करके ही मांस की प्राप्ति हो सकती है। जीव हत्या करना किसी भी दृष्टि से नैतिक या धार्मिक कृत्य नहीं हो सकता। शाकाहारी भोजन के सुन्दर रूप, रंग व सुगन्ध से भोजन के प्रति स्वाभाविक रुचि उत्पन्न होती है जबकि मांसाहारी भोजन शाकाहारी भोजन के मुकाबले रुचिकर नहीं हो सकता। मोटे रूप से भोजन को सात्त्विक और तामसिक दो भागों में बाँटा जाता है। मांसाहार निश्चित रूप से तामसिक भोजन है जिससे मनुष्य की वृत्तियों पर निश्चित रूप से तामसिक प्रभाव होगा। यदि पर्यावरण की दृष्टि से देखा जाए तो भी मांसाहार पर्यावरण पर भारी बोझ डालता है। इस प्रकार किसी भी दृष्टि से मनुष्य के लिए मांसाहार उचित नहीं है।

अन्त में यह टिप्पणी अनुचित नहीं होगी कि मांस के लिए गाय को कत्ल करना महाविनाशकारी है। महर्षि स्वामी दयानन्द ने कितना आधारभूत अर्थशास्त्र 'गोकरुणानिधि' पुस्तक में हमारे सामने रखा है कि एक गाय व एक बैल को मार कर उनके मांस से लगभग १७० आदमियों का पेट भरेगा जबकि गाय द्वारा दिये दूध और बैल द्वारा उत्पन्न किये अन्न से लगभग ६७००० मनुष्यों का पेट भरेगा। गाय के मांस का व्यापार करके धन कमाने वाले अर्धशास्त्री पता नहीं किस लोक से सम्बन्ध रखते हैं? दूसरी बात गाय को किसी मत, पन्थ, सम्प्रदाय, देश-प्रदेश से जोड़ना गाय की उपयोगिता के वैज्ञानिक-आर्थिक आधार को न समझने के कारण है। गाय तो ईश्वर द्वारा मानव मात्र को दिया गया अनुपम उपहार है। गाय को मारना ईश्वरीय उपहार का तिरस्कार है जो अनर्थकारी है, जिसके भयानक परिणामों से बचना असम्भव है।

विद्यानगर, महम रोड, भिवानी
मो. ९९९२३३४४०७

चारों वर्णों के धर्म

१- ब्राह्मण के पढ़ना पढ़ाना, यज्ञ करना कराना, दान देना, लेना, ये छः कर्म है।

२- क्षत्रिय-न्याय सेप्रजा की रक्षा अर्थात् पक्षपात छोड़ के श्रेष्ठों का सत्कार औरदुष्टों का तिरस्कार करना, सब प्रकार से सबका पालन, विद्या, धर्म की प्रवृत्ति और सुपात्रों की सेवा में धनादि पदार्थ का व्यय करना, अग्निहोत्रादि यज्ञ करना व कराना, वेदादि शास्त्रों का पढ़ना व पढ़वाना और विषयों में न फंसकर जितेन्द्रिय रहकर सदा शरीर और आत्मा से बलवान रहना।

३- गाय आदि पशुओं का पालन, वर्द्ध न करना, विद्या धर्म की बुद्धि करने कराने के लिए धनादि का व्यय करना, अग्निहोत्रादि यज्ञों का करना, वेदादि शास्त्रों का पढ़ना, सब प्रकार के व्यापार करना, एक सैकड़ें में चार, छः, आठ, बारह, सोलह व बीस आनों से अधिक ब्याज और मूल से दूना अर्थात् एक रुपया दिया तो सौ वर्ष में भी दो रुपये से अधिक न लेना और न देना, खेती करना, ये वैश्य के गुण कर्म हैं।

४- शूद्र को योग्य है कि निन्दा, ईर्ष्या, अभिमान आदि दोषों को छोड़के ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की सेवा यथावत् करना और उसी से अपना जीवन निर्वाह करना यही एक शूद्र का गुण कर्म है। (स. प्र. स. ४)

भय से और निम्न वर्णों को उत्तम वणस्थ होने के लिए उत्साह से सदा परिश्रम करते रहना होगा। इस प्रकार वर्णों को अपने-अपने अधिकार में प्रवृत्त करना राजा आदि सभ्यजनों का काम है।

(स. प्र. स. ४)

आर्यसमाज के दीवाने स्वामी दर्शनानन्द जी को शत-शत नमन

कन्हैयालाल आर्य

पंजाब प्रदेश का लुधियाना ज़िला एक ऐसा पावन क्षेत्र है जिसने आर्यसमाज के कई तप:पूत संन्यासी, विद्वान् एवं विभूतियों को जन्म दिया है जिनमें मुख्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, गुरुकुल चित्तौड़ के संस्थापक स्वामी व्रतानन्द जी थे और फिर लुधियाना ज़िले के ग्राम जगरावां को यह श्रेय प्राप्त है जहाँ राष्ट्रवीर शेरे पंजाब लाला लाजपतराय को ही जन्म नहीं दिया बल्कि हमारी इस कथा के नायक स्वामी दर्शनानन्द जी को भी आर्यसमाज की झोली में डाला। स्वामी जी एक घुमक्कड़ एवं फक्कड़ साधु थे। वे विचारक, सुधारक, लेखक, गवेषक के साथ-साथ सर्वप्रथम नि:शुल्क शिक्षा के प्रसारक थे। उनका स्वभाव बहुत सरल था और ईश्वर-विश्वास की तो वह प्रतिमूर्ति थे। कहीं भी भक्तों के कहने पर संस्था खोल लेते थे। यदि कोई पूछता कि यह संस्था कैसे चलेगी? तो वह बड़ी दृढ़ता से कहा करते थे, ''ईश्वर देगा! हम वैदिकधर्मी हैं। हमारा ईश्वर पर विश्वास है वह अपना संरक्षण और सहायता देगा।'' स्वामी जी का चिन्तन अद्‌भुत था। अपनी तर्कशैली द्वारा विधर्मियों तथा विरोधियों को परास्त करना उनके स्वभाव का एक अंग था। आपने वैदिक शास्त्रों की उर्दू टीकायें लिखकर विगत युग के अविभाजित पंजाब के उर्दू जानकारों के लिए पुरातन शास्त्रों को सुलभ किया।

जन्म-स्थान- आपका जन्म लुधियाना ज़िले के जगरावाँ ग्राम के एक सम्पन्न, धार्मिक ब्राह्मण परिवार में माघमास की दशमी के दिन विक्रम संवत १९१८ (सन् १८६१) को हुआ। यह परिवार जोशी कुल के नाम से दूर-दूर तक विख्यात था। आपके परदादा पं. परशुराम तथा दादा पं. दौलतराम तथा पिता रामप्रताप ने अपने कुल में इस विलक्षण बालक के जन्म लेने पर अपने को धन्य-धन्य माना। उस युग की रीति के अनुसार बालक का नामकरण संस्कार किया गया। पण्डितों ने आपका नाम 'नेतराम' रखा। कुछ समय व्यतीत होने पर पिता, पितामह, प्रपितामह सब ने विचार-विमर्श करके आपका नाम 'नेतराम' के स्थान पर 'कृपाराम' रख दिया।

शिक्षा- पं. रामप्रताप जी ने अपने पुत्र कृपाराम को जगरावाँ के मदरसे में प्रविष्ट कराया। बालक कृपाराम की रुचि फारसी पढ़ने की नहीं थी, कुछ समय के लिए पिता ने इन्हें मदरसे से निकालकर घर पर ही संस्कृत पढ़ाना आरम्भ कर दिया। अमरकोष आदि का अध्ययन आरम्भ हो गया। पिता जी ने कहा, ''प्रति एक सौ श्लोकों पर एक-एक रुपया पुरस्कार मिलेगा।'' कृपाराम ने यह प्रोत्साहन पाकर संस्कृत में और अधिक रुचि लेते हुए बड़ा परिश्रम किया।

व्यवसाय एवं वैराग्य- पिता जी ने इन्हें कह-सुनकर व्यवसाय करने के लिए तैयार कर लिया। पिता जी की आज्ञा शिरोधार्य करके अपना व्यापार चलाने का मन बनाया। परिवार वालों ने कपड़े की दुकान खोलने का निश्चय किया। आपने कहा, ''दुकान का नाम 'सच्ची दुकान' रखना पड़ेगा।'' सारे परिवार ने कृपाराम की यह शर्त मान ली। कुछ ही दिनों में दुकान इतनी चली कि सब कपड़े वालों को पीछे छोड़ दिया। घर वाले समझते थे कि अब वह गृहस्थ भी अच्छी तरह निभायेगा, परन्तु वे यह नहीं जानते थे कि बहुत समय तक यह प्रतिबन्धों में न रह सकेगा। एक बार आप लुधियाना में रेलवे स्टेशन से कपड़े की गाँठें छुड़वाने गये। रेलवे स्टेशन से अपने कपड़े की गाँठें छुड़वाईं तथा जो सामान १४०० रुपये का था, उसे आधे मूल्य पर बेचकर द्वारिका रामेश्वरम् की यात्रा को निकल गये।

कृपाराम का द्वन्द्व- राजा शुद्धोदन का पुत्र सिद्धार्थ (जो बाद में महात्मा बुद्ध बन गया) भरी जवानी में अपनी पत्नी यशोधरा एवं पुत्र को छोड़कर वन में चल गया था। इसी प्रकार कृपाराम भी अपनी पत्नी और पुत्र को घर छोड़कर घर से निकल पड़े। धार्मिक विषयों पर चिन्तन करते हुए कृपाराम वेदान्ती बन गये। अपने आपको ब्रह्म समझते हुए वे घर-बार को त्याग कर चले पड़े।

गृह-त्याग कर संन्यासी वेश में आप नित्यानन्द के नाम से इधर-उधर भ्रमण करते रहे। ऋषि दयानन्द के उपदेश सुनकर यह 'ब्रह्म' जीव बन गया। एक दिन उनके

चाचा पं. जयराम शर्मा को एक ट्रैक्ट 'जंगे आजादी' प्राप्त हुआ, उस ट्रैक्ट के माध्यम से पं. जयराम शर्मा जी ने उनके निवास की जानकारी प्राप्त की। इन्होंने अपने भाई रामप्रताप जी को सूचना दी, वे वहाँ से हरिद्वार, दीनानगर से कादियाँ पहुँचे। श्री नित्यानन्द भरे बाज़ार में ईसाई पादरी से शास्त्रार्थ कर रहे थे। पिता रामप्रताप जी व चाचा जयराम जी इन्हें वहाँ देखकर बड़े प्रसन्न हुए। इन्हें घर चलने को कहा, वहाँ आपने घर जाना मान तो लिया, परन्तु कुछ शर्तों के साथ। आपने पिता जी से कहा कि माता जी का ही प्रेम मुझे घर लिये जाता है, परन्तु मैं गृहस्थ बन्धन में नहीं पड़ूँगा। मैं भगवा वेश नहीं उतारूँगा। आर्यसमाज के प्रचार के लिए दो रुपये प्रतिदिन लिया करूँगा। ऋषि दयानन्द कृत सब ग्रन्थों को क्रय करके रखूँगा। पिता जी ने ये सब शर्तें स्वीकार कर लीं और नित्यानन्द के रूप में कृपाराम एक बार पुनः घर पर लौट आये।

ऋषि दयानन्द के दर्शन- यह भी कैसी विचित्र बात है कि ऋषि दयानन्द पंजाब में सर्वप्रथम लुधियाना ही पधारे थे, परन्तु आपको ऋषि-दर्शन का सौभाग्य प्राप्त न हुआ। आप संन्यासी वेश में वन-पर्वतों में विचरण कर रहे थे तभी कहीं ऋषि दयानन्द के नाम और काम की धूम सुनकर आपको ऋषि दयानन्द के उपदेशामृत सुनने की ललक जाग उठी। शीघ्र ही स्वामी दर्शनानन्द स्वामी दयानन्द के विचारों के अनुयायी बन गये। उन्होंने एक बार कहा था कि उन्होंने स्वामी दयानन्द जी के ३७ व्याख्यान सुने हैं और ३७ वर्षों तक वे धर्म-प्रचार में लगे रहे हैं। स्वामी दर्शनानन्द जी एक बार गुरुकुल बदायूँ में उपदेशक श्रेणी के विद्यार्थियों को एक विनोद प्रसंग में अपने बायें पैर पर एक चिह्न दिखाया और कहा कि चिह्न उस समय का है जब सन् १८७८ में ऋषिवर अमृतसर पधारे थे। उस समय एक विज्ञापन द्वारा ऋषि दयानन्द ने नगर के पण्डितों को निमन्त्रण दिया कि वे सत्य-असत्य का निर्णय करने के लिए शास्त्रार्थ कर सकते हैं। पण्डित लोग पीछे तो बहुत बातें करते थे, परन्तु शास्त्रार्थ करने के लिए कोई सामने नहीं आया। बहुत कहने-सुनने पर पण्डित लोग शास्त्रार्थ करने के लिए उद्यत हुए। शास्त्रार्थ तो किसी ने क्या करना था, विरोधियों ने ऋषि पर ईटों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। भक्तों ने ऋषि दयानन्द जी के आगे-पीछे होकर उन्हें तो कोई चोट न आने दी, परन्तु ऋषि के भक्तों को चोटें लगी। कृपाराम जी को भी तभी एक चोट लगी थी उसी चोट के इस चिह्न को वे सगर्व अपने शिष्यों को दिखाया करते थे मानो किसी क्रीड़ा-प्रतियोगिता में उन्हें कोई स्वर्णपदक प्राप्त हुआ हो। यह घटना १८ जून १८७८ की है।

साहित्य-सृजन- यद्यपि स्वामी दर्शनानन्द जी संस्कृत के विद्वान् थे और हिन्दी पर भी उनका अधिकार था। उनके समस्त उर्दू साहित्य को अविलम्ब हिन्दी में अनूदित किया जाता था। न्याय, सांख्य, वैशेषिक और वेदान्त (अपूर्ण) पर उनके हिन्दी-उर्दू भाष्य उपलब्ध हैं। ईशोपनिषद् से आरम्भ कर माण्डूक्य पर्यन्त छः उपनिषदों पर शङ्का-समाधानपूर्वक आपने विस्तृत भाष्य लिखे हैं। मनुस्मृति एवं गीता पर उनकी टीकाएँ मिलती हैं। पर-मत परीक्षण की दृष्टि से उन्होंने खण्डनात्मक ग्रन्थ भी लिखे। आपने जैन, इस्लाम और ईसाई मतों का गहराई से अनुशीलन किया तथा इन मतों के विद्वानों से सैकड़ों शास्त्रार्थ किए थे। जैन मत का अनुशीलन करने वाले आर्य विद्वानों की संख्या कम रही। स्वामी दर्शनानन्द इनमें प्रथम और प्रमुख थे। स्वामी दर्शनानन्द जी ने लघु पुस्तिकाओं (ट्रैक्ट) के लेखन में एक नया मापदण्ड बनाया था।

काशी-प्रवास और श्री कृपाराम जी- धनी परिवार के पुत्र कृपाराम ने शैशवकाल से ही वैभव एवं सम्पन्नता को प्रत्यक्ष देखा था। परम्परागत जीविका का साधन इनके कुल में वाणिज्य-व्यवसाय था। पिता ने यही चाहा था कि कृपाराम व्यवसाय के क्षेत्र में नाम कमाये, किन्तु यह बालक किसी दूसरी मिट्टी से बना था। वह व्यवसाय में लगा अवश्य, परन्तु धनोपार्जन के दाँव-पेंच सीखने की अपेक्षा इसने सरस्वती उपासना को अपना लक्ष्य बनाया। परिणामतः वह पंजाब को त्यागकर सरस्वती की नगरी काशी की ओर चल पड़ा।

उन दिनों काशी के पण्डितों में पं. हरिनाथ जी का बड़ा नाम था। उन्हीं के विद्यालय में प्रवेश प्राप्त किया और विभिन्न शास्त्रों में व्युत्पन्नता प्राप्त कर ली। कृपाराम स्वयं तो विद्यार्थी थे, विद्या-प्राप्ति हेतु काशी में आने वाले छात्रों के भी सच्चे हितैषी थे। उन्होंने अनुभव किया कि संस्कृत के पाठ्यग्रन्थ पर्याप्त महँगे हैं, अतः साधारण विद्यार्थी को उन्हें प्राप्त करने में कठिनाई हो रही है। उनकी जेब में

पर्याप्त धन था, शीघ्र ही 'तिमिरनाशक' प्रेस की स्थापना करके अल्प समय में अष्टाध्यायी, महाभाष्य तथा दर्शनशास्त्र के अन्य ग्रन्थों को सुलभ कराने लगे। बहुत दरिद्र विद्यार्थी को बिना एक पैसा लिए पुस्तक उपलब्ध कराने में उन्हें कोई संकोच नहीं होता था।

१. बहिष्कार से न डरे- जिस काशी में पोपदल आर्यों को ऊँचा श्वास न लेने देता था, उसी नगरी में कृपाराम ने पितामह की अन्त्येष्टि वैदिक रीति से कर दिखाई। काशी में उनका बहिष्कार किया गया। पितामह की मृत्यु से एक ही वर्ष पूर्व कृपाराम जी के चाचा पं. जयराम शर्मा जी ने जगरावाँ आकर तीन दिन प्रचार किया, विरोधियों ने बहिष्कार की धमकी दी, परन्तु कृपाराम और उसका परिवार अपने पथ से विचलित न हुआ।

२. काशी के पोंगापंथियों की चुनौती स्वीकार- काशी में पण्डितों ने यह निश्चय कर रखा था कि जो हिन्दू आर्यसमाज में उपदेश देगा या उनके सत्संग में सम्मिलित होगा, वह ब्राह्मणों से बहिष्कृत कर दिया जायेगा, परन्तु धुन के धनी ने इस चुनौती को स्वीकार किया और काशी की आर्यसमाज में आर्य विद्यार्थियों के लिए एक पाठशाला स्थापित कर वैदिक धर्म की पताका फहराई।

३. काशी में एक ऐसा शास्त्रार्थ हुआ था जिसमें एक ओर लगभग एक सौ पौराणिक पण्डित और दूसरी ओर अकेले पं. कृपाराम जी थे। पण्डितों ने 'देवता' शब्द की व्याख्या करते हुए ''देवता योनि मनुष्य योनि से न्यारी कहा'' पं. कृपाराम जी ने प्रमाण माँगा। उन्होंने कहा, ''वेद में लिखा है'' पण्डित जी ने चारों वेद सामने रख दिये। फिर कहने लगे कि यह प्रमाण शतपथ ब्राह्मण का है, पण्डित कृपाराम जी ने शतपथ ब्राह्मण सामने रख दिया। पण्डित लोग इधर-उधर झाँकने लगे। उन्होंने कहा, ''यह मनगढ़न्त के सिवा कुछ नहीं है'' पं. कृपाराम जी ने कहा, ''मनुष्य जाति में उच्चकोटि के विद्वान् होते हैं, जिनका आचरण ऊँचा होता है, वे देव कहलाते हैं।'' इस प्रकार काशी के पण्डितों की बोलती बन्द कर दी।

४. काशी प्रवास काल में दानशीलता का उदाहरण- आप लखनऊ कागज क्रय करने के लिये गये। इस निमित्त घर से पर्याप्त धन ले गये। उन्हीं दिनों उत्तर प्रदेश में आर्यों में एक कॉलेज खोलने के लिए बड़ा उत्साह था। २९ दिसम्बर १८८९ को वहाँ आपसे कॉलेज खोलने के लिए अपील कराई गई। आपकी अपील ने श्रोताओं में उत्साह का संचार कर दिया। लोगों ने उदारतापूर्वक दान दिया। अब कृपाराम जैसा दानी लोगों को तो दान देने के लिए प्रेरित करे और स्वयं न दे, यह भला कैसे सम्भ था? वह अपने घर से कागज क्रय करने के लिए जो एक हज़ार रुपये ले गये थे, वह सारा दान कर दिया। आर्यजनता कृपाराम की इस दानशीलता को देखकर बहुत प्रभावित हुई। उस समय का एक हज़ार आज के युग का १० लाख रुपये के बराबर होगा। आप कल्पना करें उस व्यक्ति की जो घर से माल लेने जावे और लौटे दान की रसीद लेकर।

५. काशी जहाँ ठगों के लिए प्रसिद्ध है, वहाँ उत्पात मचाने वाले गुण्डों के लिए भी प्रसिद्ध थी। इसी काशी ने महर्षि दयानन्द जी पर भी प्राणघातक आक्रमण किया था। जिन दिनों पं. कृपाराम जी काशी में थे, उन दिनों बटुकराम नामक गुण्डों का सरदार आर्यसमाजों की सभाओं में विघ्न डालने के लिए प्रसिद्ध था। सूझबूझ एवं नीतिमत्ता से पं. कृपाराम जी ने बटुकराम पर ऐसा प्रभाव डाला कि वह इनका कृतज्ञ बन गया।

प्रचार-यात्रा- १. लाहौर बऊली साहब में प्रचार २. मलेरकोटला में शास्त्रार्थ ३. रोपड़ में प्रचार-कार्य ४. वजीराबाद में वेदोपदेश ५. गुजराँवाला में धर्मोपदेश ६. मुज़फ्फरगढ़ में प्रचार कार्य ७. बन्नू में वेद-प्रचार ८. सक्खर में अमृतवर्षा ९. कोयटा में धर्मचर्चा १०. उनके उपदेश सुनकर काँगड़ा घाटी झूम उठी ११. धर्मशाला निवासियों ने इनकी अमृतवर्षा को अपना सौभाग्य माना। १२. बच्छोवाली लाहौर में जनता का भाव-विभोर होना १३. जालन्धर में धर्मोपदेश १४. आर्यसमाज धामपुर की स्थापना

बिजनौर के आर्यसमाज के इतिहास के लेखक श्रीमान् पं. भवानीप्रसाद जी ने तो १८९५ से आगे के कुछ वर्षों को 'कृपाराम प्रयत्न काल' तक की संज्ञा दे दी है। पं. कृपाराम जी के भागीरथ प्रयास से बिजनौर (नजीबाबाद) की आर्यसमाजें फिर से सक्रिय हो गईं। इस प्रकार उनकी प्रचार-यात्रा मृत्युपर्यन्त अनवरत चलती रही।

स्वामी दर्शनानन्द जी तथा उनके द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित पत्र- लेखन के साथ-साथ स्वामी जी ने

हिन्दी तथा उर्दू में वैदिक धर्म विषयक पत्र-पत्रिकाओं को प्रकाशित किया। उनके द्वारा प्रकाशित एवं सम्पादित पत्रों की सूची इस प्रकार है- (क) **साप्ताहिक :** १. तिमिरनाशक साप्ताहिक काशी १८८९ २. भारत उद्धारक साप्ताहिक जगराँव १८९४ ३. वैदिक धर्म साप्ताहिक मुरादाबाद १८९७ ४. तालिबे इल्म उर्दू साप्ताहिक आगरा १९०० ५. आर्य सिद्धान्त उर्दू साप्ताहिक (ख) **मासिकः** १. वेद प्रचार मासिक २. आर्य सिद्धान्त मासिक ३. ऋषि दयानन्द मासिक हरिज्ञान मन्दिर लाहौर १९०८ ४. वैदिक फ़िलॉसफी उर्दू मासिक गुरुकुल रावलपिण्डी १९०९ (ग) **मिश्रितः** १. वैदिक धर्म २. वैदिक मैगज़ीन १८९८ तथा १८९९ में दिल्ली से ३. गुरुकुल समाचार सिकन्दराबाद (उत्तरप्रदेश) ४. मुबाहिसा, बदायूँ १९०३।

गुरुकुलों की स्थापना- स्वामी दर्शनानन्द जी को ईश्वर पर पूर्ण विश्वास था। इसी विश्वास के बल पर आपने कई संस्थाओं की स्थापना की। प्राचीन शिक्षा-प्रणाली को पुनर्जीवित करने व नये-नये गुरुकुलों की स्थापना करने का उन्हें व्यसन था। गुरुकुल की स्थापना करते ही, व्यवस्था का भार स्थानीय लोगों को सौंपते और आगे चल पड़ते थे।

(१) गुरुकुल सिकन्दराबाद, जनपद सहारनपुर (उ.प्र.) १८९९ (२) तपोभूमि गुरुकुल सूर्यकुण्ड बदायूँ १९०३ (३) गुरुकुल बिरालसी १९०५ (४) गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर १९०७ (५) गुरुकुल चोहाभक्तां, जनपद रावलपिण्डी १९०८

अपनी खुशी से आये न अपनी खुशी चले- महाविद्यालय ज्वालापुर की स्थापना से ही स्वामी जी ने कहना प्रारम्भ कर दिया कि वह अब अधिक समय तक जीवित न रह सकेंगे। ऐसा लगता है कि उन्हें अपनी मृत्यु का आभास हो रहा था। १९०८ में स्वामी जी ने 'महाविद्यालय समाचार' में एक लेख के माध्यम से लिख दिया था कि हमारी जीवन-यात्रा अब समाप्ति के लगभग निकट है। अपनी मृत्यु से केवल दो मास पूर्व 'भारत सुदशा प्रवर्तक' में दिए गये एक लेख में तो और स्पष्ट शब्दों में लिखा, ''मेरा शरीर अब समाप्त होने वाला है।'' रुग्ण होने पर आप भी औषधि का सेवन नहीं करते थे। भक्तजन असमंजस में थे कि क्या करें? इधर स्वास्थ्य गिर रहा था, उधर उन्हें वेद-प्रचार की चिन्ता सताये जा रही थी। जब आपके स्वास्थ्य में सुधार होता न दिखाई दिया तो आर्य पुरुषों ने आपसे कहा कि आपकी कोई मृत्यु-इच्छा (Death will)? ऋषि दयानन्द के सच्चे भक्त स्वामी दर्शनानन्द जी ने कहा, ''क्या ऋषि दयानन्द जी के आदेश का पालन हो चुका? अर्थात् क्या ऋषि की इच्छा पूरी कर चुके हो जो नई-नई वसीयतों (मृत्यु-इच्छाएँ) की खोज कर रहे हो।'' स्वामी जी की शारीरिक व्यथा को देखकर आर्यजनों ने पूछा, ''संस्कार के विषय में क्या आज्ञा है?'' स्वामी जी का उत्तर बड़ा विचित्र था, परन्तु उसमें से भी उनकी भावनायें छलक रहीं थीं। आपने कहा, ''कुछ नहीं, ऐसे शरीर को जिससे किसी का उपकार न हुआ हो, कुत्तों के सामने डाल दो।''

दयानन्द अनाथालय के अनाथ बालकों को नमस्ते के उत्तर में कहा, ''ऋषि के मिशन पर चलोगे तो मनुष्य बन जाओगे, नहीं तो पशु के पशु बने रहोगे।''

अन्तिम इच्छा- आर्यसमाज हाथरस के वार्षिकोत्सव में उन्हें शय्या पर ही पण्डाल में ले जाया गया। अब उस आर्यसमाज के दीवाने के विषय में सोचिये! चोला छोड़ने में केवल छः घण्टे का समय शेष था। आप कठिनता से बोल पाये, ''जिस किसी को भी शास्त्रार्थ करना हो, कर लो फिर मत कहना।'' उन्होंने अन्तिम समय में कहा, ''भद्र पुरुषो! हमारा अन्तिम नमस्ते स्वीकार कीजिये। ऋषि दयानन्द के ३७ व्याख्यान सुने थे ३७ वर्ष ही कार्य किया। ईश्वर आप लोगों को साहस दे कि आप अपने धर्म को समझें।'' यह कहकर ११ मई १९१३ को आपने प्राण त्याग दिये। अन्तिम वेला में अपने वार्तालाप के समय अजमेर में उर्दू कवि की यह पंक्ति कहीं थी- ''अपनी खुशी से न अपनी खुशी चले।''

सन्दर्भ ग्रन्थः १. परमहंस परिव्राजकाचार्य स्वामी दर्शनानन्द जीवन चरित, लेखक प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

२. आर्यसमाज के विद्वान् लेखक और साहित्य सेवी, प्रो. भवानीलाल भारतीय

३. उपनिषद प्रकाश की भूमिका श्री नन्दकिशोर, ज्वालापुर (हरिद्वार)।

शङ्का समाधान - ४७

डॉ. वेदपाल

शङ्का- शालाकर्म विधि में चार जलसेचन के मन्त्र जो कि पारस्कर गृह्यसूत्र के हैं- **१. ओम् इमामुच्छ्र.** (सं. वि.) में **वसोर्द्धारां** तथा **घृतमुच्छ्रयमाणा** पाठ है। आप द्वारा प्रकाशित पारस्कर गृह्यसूत्र ग्रन्थ में **वसोर्धारां** तथा **घृतमुक्षमाणा** पाठ है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के हस्तलेख के अनुसार संस्कारविधि का पाठ शुद्ध है अथवा नहीं?

ब्र. राजेन्द्र आर्य, ग्रेटर फरीदाबाद

समाधान- आपने संस्कारविधि तथा मेरे द्वारा व्याख्यात एवं सम्पादित पारस्कर विषयक जिज्ञासा की है। आपकी शङ्का दो पदों-मन्त्र के द्वितीय पादस्थ **वसोर्धारां** तथा चतुर्थ पादस्थ **घृतमुक्षमाणा** को लेकर है। आपने संस्कारविधि में इन दोनों पदों का पाठ क्रमशः **वसोर्द्धारां** तथा **घृतमुच्छ्रयमाणा** लिखा है, किन्तु यह पाठ किस संस्करण/कहाँ से प्रकाशित का है? इसका उल्लेख नहीं किया है। अस्तु।

संस्कारविधि के शालाकर्म में उद्धृत यह मन्त्र पारस्कर गृह्यसूत्र ३.४.४ से गृहीत है। शांखायन गृह्यसूत्र में यह मन्त्र पाठान्तर के साथ उपलब्ध है। शांखायन में **वसोर्धारां** के स्थान पर **मधोर्धारां** पाठ है। चतुर्थ पाद में **घृतमुक्षमाणा** ही पाठ है। इसके अतिरिक्त किसी भी गृह्यसूत्र में यह मन्त्र नहीं है।

कर्क, जयराम, हरिहर, गदाधर, विश्वनाथ ये पाँच पारस्कर गृह्यसूत्र के प्रसिद्ध भाष्यकार हैं। कर्क आदि पाँचों भाष्यों के साथ पारस्कर का प्रामाणिक संस्करण-'गंगाधर महादेव बाक्रे' द्वारा सम्पादित तथा 'मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्रा. लि. दिल्ली' से प्रकाशित है। इस संस्करण में वही पाठ है, जो हमारे द्वारा पारस्कर में स्वीकार किया गया है। इसके अतिरिक्त 'चौखम्बा अमर भारती प्रकाशन' से प्रो. ओम्प्रकाश पाण्डेय कृत हिन्दी अनुवाद सहित पारस्कर गृह्यसूत्र का एक संस्करण सन् १९८० में प्रकाशित हुआ है। इस संस्करण में भी हमारे द्वारा स्वीकृत पाठ है। हिण्डौन से डॉ. सत्यव्रत राजेश कृत हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित पारस्कर गृह्यसूत्र में भी हमारे द्वारा स्वीकृत पाठ है।

संस्कारविधि अनेक स्थानों से प्रकाशित है। पण्डित भारतेन्द्रनाथ ने संवत् २०३२ वि. में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी संस्करण प्रकाशित किया था। इसमें द्वितीय पाठ में **वसोर्धारां** तथा चतुर्थ पाद में **घृतमुच्छ्रयमाणा** पाठ है। पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक तथा पण्डित मदनमोहन विद्यासागर ने **वसोर्द्धारां** तथा **घृतमुक्षयमाणा** पाठ रखा है।

इस प्रकार द्वितीय पाद में **वसोर्धारां** के साथ ही **वसोर्द्धारां** (इन दोनों में अर्थ का कोई अन्तर नहीं है, केवल सन्धि के कारण बाह्य आकृति का भेद है।) तथा चतुर्थ पाद में **१. घृतमुक्षमाणा २. घृतमुच्छ्रयमाणा ३. घृतमुक्षयमाणा** ये तीन पाठ उपलब्ध होते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत संस्कारविधि के द्वितीय संस्करण की मूलप्रति पृष्ठ १९७ (इसे महर्षि ने बोलकर लिखवाया था) तथा इसी द्वितीय संस्करण की मुद्रण प्रति पृष्ठ १४४ (प्रेस कापी) में **वसोर्द्धारां** तथा **घृतमुक्षमाणा** पाठ है।

हमारे द्वारा सम्पादित गृह्यसूत्र में चतुर्थ पाद में **घृतमुक्षमाणा** पाठ गृह्यसूत्र तथा महर्षि दयानन्द के हस्तलेखानुसार पाठ है और द्वितीय पादस्थ पाठ **वसोर्धारां** तथा **वसोर्द्धारां** पाठ में कोई अर्थ का भेद नहीं है, अपितु व्याकरण के एक विकल्पानुसार पाठ के कारण है। यह पाठ-**वसोर्+धारां** इन दो पदों का सन्धि किया हुआ पाठ है। यहाँ पर **अचो रहाभ्यां द्वे** अष्टा. ८.४.४६ सूत्र से **धारां** के धकार को द्वित्व होकर-**वसोर् ध् धारां**। इस अवस्था में 'झलां जश् झशि'-अष्टा. ८.४.५३ सूत्र से 'धारां' से पूर्ववर्ती **ध्** को **द्** होकर-**वसोर्द्धारां** बना है।

यहाँ यह ध्यान रखने योग्य है कि सूत्र ४६ द्वारा धकार को द्वित्व हुआ है, किन्तु इससे पूर्वसूत्र-**परोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा** अष्टा. ८.४.४५ से **वा**=विकल्प की अनुवृत्ति आ रही है। अर्थात् यह प्रयोक्ता पर निर्भर है कि वह चाहे तो द्वित्व करे और न चाहे तो न करे। इस प्रकार **वसोर्धारां** तथा **वसोर्द्धारां** दोनों प्रयोग साधु प्रयोग हैं। इनके अर्थ में कोई अन्तर नहीं है।

चतुर्थ पादस्थ **घृतमुक्षमाणा** में **उक्षमाणा** तथा **घृतमुक्षयमाणा** में **उक्षयमाणा** पद **उक्ष सेचने (भ्वादि.)** से निष्पन्न है तथा **घृतमुच्छ्रयमाणा** में **उच्छ्रयमाणा** पद **उत् उपसर्ग** पूर्वक **श्रिञ् (भ्वादि.)** धातु से निष्पन्न है। धातु भिन्नता के कारण इनके अर्थ में भी किञ्चित् भेद है।

अतः संक्षेप में कह सकते हैं कि हमारे द्वारा स्वीकृत पाठ **वसोर्धारां** तथा **घृतमुक्षमाणा** गृह्यसूत्रानुसार तथा महर्षि के हस्तलेखानुसार हैं। **वसोर्धारां** तथा **वसोर्द्धारां** में से हमने **वसोर्धारां** को रखा है, यह सूत्रानुसार तथा व्याकरणानुसार साधु पाठ है। हाँ, पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक तथा पण्डित मदनमोहन विद्यासागर स्वीकृत **उक्षयमाणा** तथा पण्डित भारतेन्द्रनाथ स्वीकृत **उच्छ्रयमाणा** पाठ अन्यत्र उपलब्ध नहीं है।

संस्था की ओर से....

क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते?
तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें, इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशित भी किये जाते है।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि-यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

परोपकारिणी सभा की गतिविधियाँ

परोपकारिणी सभा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित उनकी उत्तराधिकारिणी सभा है और केवल नाम से ही नहीं, बल्कि अपने कार्यों से भी वह ऋषि के उत्तराधिकार के दायित्व को पूर्णतया निभा रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती

ने इस सभा की स्थापना के समय तीन उद्देश्य रखे थे।

१. वेदादि सत्यशास्त्रों का प्रकाशन २. विद्वान् उपदेशक तैयार करके देश-विदेश में वैदिक धर्म का प्रचार एवं ३. आर्यावर्त्तीय दीन-दरिद्रों की सेवा।

इन सभी कार्यों को सभा अपने विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से पूरा करने में सर्वसामर्थ्य से लगी हुई है। यद्यपि सभा के पास आर्थिक आय का कोई स्थाई माध्यम नहीं है, पुनरपि ऋषिभक्तों एवं आर्यजनों के सहयोग और विश्वास पर ही सभा ने बड़े-बड़े कार्यों को प्रारम्भ किया और निरन्तर कर भी रही है। आचार्य डॉ. धर्मवीर जी, जो कि वर्तमान में परोपकारिणी सभा के प्रधान एवं मूल स्तम्भ थे, उनका कहना था कि **''कार्य यदि अच्छा है तो उसे प्रारम्भ कर देना चाहिये, सहयोग तो स्वयं ही मिल जाता है।''** यही शैली अपनाकर आज भी वैदिक विचार के प्रचार का कार्य निरन्तर जारी है। डॉ. धर्मवीर जी के जाने से सभा को बड़ा आघात अवश्य लगा है, परन्तु आर्यों का स्नेह, भरोसा उनके द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्यों को रुकने नहीं देगा-ऐसा सभा को पूर्ण विश्वास है।

परोपकारिणी सभा आज अनेक कार्यों, माध्यमों से इस वेद प्रचार यज्ञ में लगी है, जिसकी सूची यहाँ दी जा रही है-

भव्य ऋषि उद्यान आश्रम, अतिथि यज्ञ, भोजनशाला, गौशाला, वानप्रस्थ एवं संन्यासाश्रम, गुरुकुल, परोपकारी पत्रिका, प्रकाशन, योग साधना एवं चरित्र निर्माण शिविर, सत्यार्थ प्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का नि:शुल्क वितरण, पाण्डुलिपियों का डिजिटलाइजेशन, पुस्तकालय, औषधालय, देश-देशान्तरों में वेद-प्रचार, आयुर्वेदिक औषधालय।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

परोपकारिणी सभा में आयुर्वेदिक चिकित्सक की आवश्यकता

सभा द्वारा संचालित आयुर्वेदिक चिकित्सालय के लिये योग्य आयुर्वेदिक चिकित्सक की आवश्यकता है। चिकित्सालय में सेवा देने का समय प्रतिदिन २ घण्टे है। आवास, भोजन आदि की व्यवस्था सभी की ओर से ही होगी।

सम्पर्क- ०१४५-२६२१२७०, ९४६०४२११८३

परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091 email : psabhaa@gmail.com

दानदाताओं की सूची

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से १५ अप्रैल २०१९ तक)

१. श्री आर. पी. सिंह, दिल्ली २. श्री वासुदेव सिंह, वाराणसी ३. मास्टर धर्मवीर, पलवल ४. श्रीमती सरोज दीक्षा, दिल्ली ५. श्री संजीव भालेकर, निजामाबाद ६. श्री रमेश मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर ७. श्री प्रकाश चौधरी, करनाल ८. मास्टर सुन्दर सिंह, करनाल ९. आर्य केन्द्रीय सभा, करनाल १०. आर्यसमाज, कैथल ११. श्री अग्निवेश व श्रीमती कंचन आर्य, ऋषि उद्यान, अजमेर १२. श्री शंकर मुनि, अजमेर १३. श्री जितेन्द्र कुमार यादव, रेवाड़ी १४. श्री प्रकाश व्यास, चित्तौड़गढ़ १५. नर्सिंग अस्पताल स्टॉफ आफिसर्स, रोहतक २०. डॉ बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर २१. डॉ. सत्यव्रत, रोहतक २२. मै. जेनिथ एन्टरप्राइजेज, दिल्ली २३. श्री मुमुक्षु मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर २४. श्री पुष्कर गोयल, मुजफ्फरनगर २५. श्रीमती सरला मेहता, अजमेर २६. श्री शिवकुमार मल्होत्रा, मुलुण्ड, मुंबई २७. श्री फहाल सिंह , पाली २८. श्री लक्ष्मण मुनि, ऋषिउद्यान, अजमेर २९. श्री कमलेश शर्मा, अजमेर ३०. श्रीमती मिथलेश आर्य, बैंगलोर।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गोशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(०१ से १५ अप्रैल २०१९ तक)

१. श्री चन्द्रप्रकाश आर्य, भीलवाड़ा २. श्री रमेश मुनि, अजमेर ३. श्री अग्निवेश व श्रीमती कंचन आर्य, अजमेर ४. श्री सुरेन्द्र सिंह यादव, अजमेर ५. श्री सौरभ क्षोती, अजमेर ६. श्रीमती कान्ता रांका, अजमेर ७. श्री विशाल, रोहतक ८. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर ९. श्री मुमुक्षु मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर १०. श्री सी.एल. भण्डारी, ठाणे ११. मै. विमल पेपर्स, नवी मुंबई १२. श्री उदयचन्द पटेल, बैंगलोर १३. श्री मेवाराम प्रजापति, सीकर १४. श्री लक्ष्मण मुनि, अजमेर १५. श्री राजीव यादव, अजमेर १६. श्रीमती निर्मला गुप्ता, अजमेर १७. युक्तेश्वर सूद, लुधियाना १८. श्री नरेश कुमार मदान, जालन्धर शहर।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १२ से १९ मई, २०१९ – **आर्यवीर दल शिविर**

२. २२ से २९ मई, २०१९ – **आर्य वीराङ्गना शिविर**

३. १६ से २३ जून, २०१९– **योग-साधना शिविर**

४. १३ से २० अक्टूबर, २०१९– **योग-साधना शिविर**

५. ०१, ०२, ०३ नवम्बर २०१९– **ऋषि मेला**

ऋषि उद्यान में होने वाले कार्यक्रमों के लिए

सम्पर्क सूत्र- ०९४६०४२११८३, ०१४५-२४६०१६४, ०१४५-२६२१२७०

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १६ से २३ जून २०१९

आर्यसमाज के उच्चकोटि के विद्वान् व साधकों के निर्देशन में परोपकारिणी सभा योग साधना शिविर का आयोजन कर रही है। अपने आध्यात्मिक जीवन को गति प्रदान करने में ये शिविर सहयोगी होगा।

इच्छुक प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे– समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा– खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

१०. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ– परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) कार्यालय से (०१४५–२४६०१६४) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। लौटने का रेल–आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने–पीने की वस्तुएँ साथ न

लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (०१४५-२६२१२७०) में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

संयोजक

वैदिक पुस्तकालय अजमेर द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट

१. कुल्लियाते आर्य मुसाफिर (पं. लेखराम ग्रन्थ संग्रह)- दो भाग
लेखक- पण्डित लेखराम
सम्पादक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर, पंजाब
मूल्य- रुपये ~~९००~~/- **छूट पर**- ६००/-

२. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (दो भाग में)
मूल्य - रुपये ~~८००~~/- **छूट पर** - ५००/-

३. अष्टाध्यायी भाष्य- ३ भाग (१ सैट)
भाष्यकार- महर्षि दयानन्द सरस्वती
मूल्य- रुपये ~~५००~~/- **छूट पर**- ३५०

पुस्तकें हेतु सम्पर्क करें:-

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु
खाता धारक का नाम - **वैदिक पुस्तकालय, अजमेर। दूरभाष - 0145-2460120**
बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या - **0008000100067176**
IFSC - PUNB0000800

प्रान्तीय आर्यवीर दल व आर्य वीरांगना दल शिविर

युवक व युवतियों के संस्कार निर्माण का सुनहरा अवसर

आर्यवीर दल जिला अजमेर का

जिला स्तरीय जूडो-कराटे, आसन-प्राणायाम, व्यायाम प्रशिक्षण एवं संस्कार शिविर

छात्रों हेतु दिनांक 12 मई से 19 मई 2019 तक तथा

छात्राओं हेतु दिनांक 22 मई से 29 मई 2019 तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

आयोजक

परोपकारिणी सभा, अजमेर एवं आर्यवीर दल, राजस्थान (अजमेर सम्भाग)

शिविर में प्रवेश हेतु आवश्यक नियम

- पंजीयन शुल्क 500/- रु. देना अनिवार्य है।
- शिविरार्थियों के आवास,भोजन की व्यवस्था, परोपकारिणी सभा द्वारा रहेगी।
- शिविरार्थी की आयु कम-से-कम 10 वर्ष से कॉलेज स्तर तक हो तथा वह पूर्ण रूप से स्वस्थ होना/होनी चाहिये।
- शिविरार्थी अपने साथ सफेद टी-शर्ट, नीला लोअर, सफेद पी.टी. शूज, सफेद मोजे, मौसम के अनुकूल पहनने के कपड़े, दो नए फोटो, पैन, टॉर्च, तेल व साबुन इत्यादि अनिवार्य रूप से लावें।
- प्रत्येक शिविरार्थी को शिविर की दिनचर्या व अनुशासन का पालन करना होगा। अनुशासनहीनता करने पर शिविर से पृथक् कर दिया जायेगा।
- **छात्र गणवेश**- सफेद टी-शर्ट, खाकी नेकर, सफेद सेन्डो बनियान, सफेद पी.टी. शूज, सफेद मौजे, दो पासपोर्ट फोटो लाना अनिवार्य है।
- **छात्रा गणवेश**- सफेद टी-शर्ट, नेवी ब्ल्यू लोअर, सफेद पी.टी. शूज, सफेद मौजे, दो पासपोर्ट फोटो लाना अनिवार्य है।

आवश्यक निवेदन एवं अपील

इस विशाल शिविर के प्रबन्धन, भोजन, आवास, विज्ञापन, मार्गव्यय, मानदेय आदि पर पर्याप्त व्यय होगा। अतः आप सभी दानी महानुभावों एवं आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपनी सहायता राशि नकद/चैक/ड्राफ्ट आदि परोपकारिणी सभा, अजमेर-305001 के पते पर भेजने की कृपा करें।

विशेषः भामाशाह दानी महानुभाव एक दिन अथवा एक समय के भोजन का व्यय अथवा भोजन सामग्री देकर भी सहयोग कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र

यन्तीन्द्र शास्त्री (व्यायामाचार्य) -09414436031, 9057242009, 6378323821

ऋषि उद्यान - फोन : 0145-2621270

आर्यजगत् के समाचार

१. वार्षिकोत्सव- आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत, जि. सिरोही, राजस्थान का वार्षिकोत्सव दि. २५ से २७ मई २०१९ को मनाया जा रहा है। त्रि-दिवसीय इस वार्षिकोत्सव में यज्ञ, भजन, वेदोपदेश तथा ब्रह्मचारियों द्वारा शास्त्रार्थ, व्याख्यान, व्यायामादि के प्रदर्शन इत्यादि अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे। **सम्पर्क सूत्र- ९४१४५८९५१०, ८००५९४०९४३**

२. आवश्यकता- आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत, जि. सिरोही, राजस्थान (सम्बद्ध महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा) में संस्कृत-साहित्य, हिन्दी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, गणित आदि विषयों के अध्यापन हेतु अध्यापकों की आवश्यकता है। कृपया सेवानिवृत्त अध्यापक महानुभाव ही सम्पर्क करें। आवास, भोजन, गोदुग्ध की निःशुल्क व्यवस्था के साथ-साथ समुचित मानदेय भी दिया जायेगा। इच्छुक महानुभाव गुरुकुल के आगामी वार्षिकोत्सव पर दि. २५ से २७ मई को पधारें। **सम्पर्क सूत्र- ८७६४२१८८८१, ९४१४५८९५१०**

३. शिविर का आयोजन- सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल प्रत्येक वर्ष देश के विभिन्न राज्यों में कन्याओं के शिविर का आयोजन करता है। इस वर्ष भी यह शिविर महर्षि दयानन्द की निर्वाण स्थली अजमेर (राजस्थान) में आयोजित किया जा रहा है। शिविर में उपस्थित होकर गरिमा प्रदान करें। शिविर दि. ३१ मई से ९ जून २०१९ तक चलेगा। **सम्पर्क सूत्र- ९८१०७०२७६०**

४. राष्ट्रीय शिविर- सार्वदेशिक आर्यवीर दल के अध्यक्ष स्वामी देवव्रत सरस्वती की अध्यक्षता में शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। प्रवेशार्थी आर्यवीर दल या आर्यसमाज के अधिकारी का संस्तुति पत्र, २ फोटो एवं पहले उत्तीर्ण परीक्षा के प्रमाणपत्र की प्रतिलिपि साथ लेकर आयें। शिविर के अनुशासन का पूर्णतः पालन करना होगा। शिविर दि. २ से १६ जून २०१९ को गुरुकुल शिवालिक अलियासपुर, अम्बाला, हरियाणा में आयोजित किया जायेगा। प्रवेश शुल्क शाखानायक ५०० रु. और उपव्यायाम, व्यायाम शिक्षक ६०० रु. होगी। पाठ्यपुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

सम्पर्क- ९९९१७०००३४, ९४६६४३६२२०

५. वार्षिकोत्सव- आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर कानपुर का स्वर्णजयन्ती समारोह का ५०वाँ वार्षिकोत्सव दि. १५ से १९ मई तक मनाया जायेगा। जिसमें भव्य शोभायात्रा, नगर कीर्तन का भी आयोजन किया जा रहा है।

सम्पर्क सूत्र- ८९५७१२१७०४

६. यज्ञ- वैदिक नव संवत्सर पर दि. ६ अप्रैल २०१९ को आर्यसमाज शृंगार नगर, लखनऊ द्वारा निकटवर्ती पार्क में १०१ कुण्डीय यज्ञ किया गया। यज्ञ के संचालक आचार्य रूपचन्द्र 'दीपक' और सहसंचालक पं. गिरजेश कुमार रहे।

७. स्थापना दिवस मनाया- आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर, राजस्थान द्वारा नव संवत्सर २०७६ व आर्यसमाज का १४४वाँ स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डॉ. सतीश कच्छावा, डॉ. राधेश्याम आदि ने अपने विचार प्रकट किये।

८. राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित- उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार के पूर्व कुलपति एवं वर्तमान में स्वामी रामदेव के विश्वप्रसिद्ध पतंजलि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल एवं आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. रघुवीर वेदालंकार को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। महामहिम राष्ट्रपति की ओर से भारतीय गणराज्य के महामहिम उपराष्ट्रपति श्रीमान् वेंकैया नायडू ने यह पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान किया। परोपकारी परिवार की ओर से दोनों विद्वानों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

९. स्थापना दिवस - सृष्टि के प्रारम्भ दिवस व आर्यसमाज के स्थापना दिवस पर आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर ने प्रभात फेरी में बालिका शिक्षा, नशा मुक्ति, प्रदूषण दूर करने का संदेश दिया।

१०. स्थापना दिवस मनाया- आर्यसमाज स्थापना दिवस पर दि. ६ अप्रैल २०१९ को आर्यसमाज किशनपोल बाजार, जयपुर, राजस्थान में सेवानन्द सरस्वती वैदिक धर्म

प्रचार-प्रसार न्यास के द्वारा स्वाधीनता सेनानी हरिसिंह आर्य की जयन्ती समारोह में सत्यार्थ भूषण श्रीमती सरोज वर्मा द्वारा लिखित १७वीं पुस्तक '**तमसो मा ज्योर्तिगमय**' का विमोचन किया गया।

११. महासम्मेलन- आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका और आर्यसमाज शिकागोलैंड, शिकागो अमेरिका की ओर से, हम आपको और आपके परिवार को २९वें आर्य महासम्मेलन में भाग लेने के लिए निमंत्रित करते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। सम्मेलन जुलाई २५ - २८, २०१९ को, शिकागो, अमेरिका में होगा। सम्मेलन का विषय है- वेद की ज्योति द्वारा अपने जीवन का प्रदीपन। इस मुख्य विषय के सन्दर्भ में विशिष्ट चर्चा के विषय होंगे: वैदिक परिप्रेक्ष्य में विश्व शांति, निरंतर समरसता, नारी सशक्तीकरण। इस कार्यक्रम में योग एवं ध्यान सत्र, रोचक युवा सत्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम, आर्यसमाज से संबंधित सम-सामयिक विषयों पर चर्चा, सामाजिक कल्याण सम्बंधित चर्चाओं, और वयस्कों तथा युवाओं के लिए गतिविधियों को शामिल किया जाएगा।

सम्पर्क- http://facebook.com/vedicamerica

सम्पर्क- www.aryasamaj.com/ams

शोक समाचार

१२. आर्यभजनोपदेशक पण्डित कुलदीप आर्य के पूज्य पिता **श्री धर्मवीर सिंह जी** का चैत्र शुक्ला नवमी विक्रमी सम्वत् २०७६ तदनुसार दि. १४ अप्रैल २०१९ को देहावसान हो गया। वे हृदयाघात होने पर बिजनौर में चिकित्साधीन थे। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को उत्तम नवजीवन रूप सद्गति व शोकसन्तप्त परिवार को इस विकट विपत् में धैर्य प्रदान करे।

भारत देश बचाओ तुम

पं. नन्दलाल निर्भय

भारत के नर-नारी जागो, मिलकर कदम बढ़ाओ तुम।
देश द्रोही-गद्दारों से, भारत देश बचाओ तुम।।
प्यारा आर्यावर्त हमारा, सकल विश्व का स्वामी था।
रणकौशल में, विद्याबल में, भूमण्डल में नामी था।।
अश्वपति, हरिश्चन्द्र, शिवि से, राजा यहाँ निराले थे।
राम, भरत, लक्ष्मण, अंगद से, महावीर मतवाले थे।।
अर्जुन, भीम, नकुल की गाथा, गाओ मत घबराओ तुम।
देश-द्रोही, गद्दारों से, भारत देश बचाओ तुम।।१।।
पृथ्वीराज महाबलशाली, जन्मा था हम्मीर यहाँ।
आल्हा, ऊदल से योद्धा, मलखान हुआ रणधीर यहाँ।।
वैरीदल के संहारक, प्रताप-शिवा थे वीर यहाँ।
गोविन्दसिंह, बन्दा, नलवा की, नामी थी शमशीर यहाँ।।
भीमसिंह, गोरा, बादल को, याद करो सुख पाओ तुम।
देश-द्रोही, गद्दारों से, भारत देश बचाओ तुम।।२।।
पापी पाकिस्तान, चीन अब हम पर रौब जमाते हैं।
फ्रांस, रूस, अमेरिका अपनी ताकत पर इठलाते हैं।।
अरब, कोरिया और जर्मनी, बढ़-बढ़ बात बनाते हैं।
बंगलादेशी लंकावाले तनिक नहीं शर्माते हैं।।
अंगड़ाई ले उठो साथियो! अपना जोर दिखाओ तुम।
देश-द्रोही गद्दारों से, भारत देश बचाओ तुम।।३।।
भारत के कुछ गन्दे नेता, नित उत्पात मचाते हैं।
ममता, माया, राहुल गाँधी, भ्रष्टाचार बढ़ाते हैं।
प्रियंका, अखिलेश, मुलायम, जनता को भड़काते हैं।
पाकिस्तान, चीन के ये रोजाना गाने गाते हैं।।
कमर तोड़ दो खुदगर्जों की, जग में नाम कमाओ तुम।
देश-द्रोही गद्दारों से, भारत देश बचाओ तुम।।४।।
नरेन्द्र मोदी, देशभक्त भारत का नेता प्यारा है।
चरित्रवान् ईमानदार सच्चा हमदर्द हमारा है।।
वीर साहसी जागरूक भारत का पुत्र दुलारा है।
जिस योद्धा की विकट वीरता, मान रहा जग सारा है।।
दोबारा प्रधानमन्त्री, मिलकर इसे बनाओ तुम।
देश-द्रोही गद्दारों से भारत देश बचाओ तुम।।५।।
अवसर पर यदि चूक गए तुम, जीवन भर पछताओगे।
याद रखो नासमझ-अनाड़ी जग में माने जाओगे।।
साथ निभाओ मोदी जी का, भारी इज्जत पाओगे।
भारत जग का गुरु बनेगा, तुम भी मौज उड़ाओगे।।
'नन्दलाल' निर्भय होकर दुनिया में धूम मचाओ तुम।
देश-द्रोही गद्दारों से, भारत देश बचाओ तुम।।६।।